32

अवधारणा और विशेषताएं

हम सभी, प्राय:, विभिन्न वस्तुओं को अलग-अलग स्थितियों में स्पष्ट या व्यक्त करने के लिए स्वच्छन्दतापूर्वक 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी उच्च वर्गीय लोगों की जीवन-शैली को 'संस्कृति' कहते हैं और कभी कुछ लोगों को 'असंस्कृत' बताते हैं जिसका भाव 'उद्धत' अथवा अशिष्ट होता है। 'समाजशास्त्र' में 'असंस्कृत' नाम का कोई शब्द नहीं है क्योंकि उसकी दृष्टि में हर मानव की संस्कृति अर्थात जीवन-शैली अपनी निजी प्रकार की होती है। संस्कृति व्यक्तियों को साथ-साथ जोड़कर रखती है और एक समूह में बनाए रहती है तथा उन्हें अन्य लोगों से पृथक या अलग पहचान प्रदान करती है। हमारी संस्कृति हमें 'भारतीय' बनाती है और अमेरिकन (अमरीकी) अथवा जर्मन लोगों से अलग पहचान देती है। इस भांति, संस्कृति एक समाज या समूह को निजी पहचान दिलाने वाला तत्व है। कुछ निश्चित पदार्थों के उत्पादों के माध्यम से भी संस्कृति की पहचान होती है। यह भाषा, धर्म, अर्थ-व्यवस्था और राजनैतिक प्रणाली इत्यादि से भी जानी पहचानी जाती है। संस्कृति एक जीवन-पद्धति है जो एक ही जन-समुदाय में समान प्रकार की होती है। इसके अंतर्गत एक जन-समुदाय की आस्थाएं, विश्वासों, अभिवृत्तियाँ आपसी समझ और व्यवहार के तौर-तरीकों के एकत्रित स्वरूप आते हैं। उनसे हमें एक दूसरे को समझने में आसानी होती है। इस पाठ में, आप संस्कृति, इसकी धारणा और इसके चारित्रिक गुणों (विशेषताओं) के विषय में और अधिक पढ़ेंगे।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- संस्कृति की परिभाषा बता सकेंगे;
- संस्कृति की धारणा को समझ सकेंगे; और
- संस्कृति की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।

32.1 संस्कृति की परिभाषा

संस्कृति हमारी अस्मिता और अस्तित्व का अभिन्न अंग है। तथापि, यह विभिन्न समाजों में अलग-अलग होती है। हम संस्कृति को निम्नांकित उदाहरणों द्वारा और अच्छी तरह समझ सकते हैं। जैसे- जब कभी हम अपने किसी रिश्तेदार या मित्र से मिलते हैं, तो दोनों हाथ जोड़कर 'नमस्कार' करते हुए अभिवादन करते हैं। यह भारतीय संस्कृति की एक खासियत है। पश्चिमी समाजों में अपने मित्रों और रिश्तेदारों का अभिवादन करने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके जैसे हाथ मिलाना, गले मिलना और चुंबन करके मिलना प्रचलित है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

अब हम संस्कृति की परिभाषा करें तो सबसे अधिक स्वीकृत, प्रचलित और आसान परिभाषा यह है "संस्कृति मानव द्वारा, समाज के एक सदस्य के रूप में, अर्जित ज्ञान, विश्वासों, आस्थाओं, कला-कौशलों, आचार-विचारों, कानूनों, रीति-रिवाजों तथा अन्य क्षमताओं का एक समग्र-जटिल स्वरूप है।"

इस परिभाषा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि संस्कृति में सीखने और सिखानें दोनों की क्षमताएँ निहित हैं। दूसरे शब्दों में एक समूह का हर व्यक्ति क्षमताएँ सिखलाता और सीखता है। सीखने और सिखाने की प्रक्रियाएँ एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति, एक समूह से दूसरे समूह और एक स्थान से दूसरे स्थान में भिन्न-भिन्न होते हैं।

फिर भी, ये प्रक्रियाएँ कुछ सामान्य मानव-व्यवहार और क्रियाओं - जैसे भवन-निर्माण, भोजन-उत्पादन और तैयार करने, वस्त्रों, भाषा आदि पहलुओं पर केन्द्रित किए जा सकते हैं। भोजन-उत्पादन तथा भोजन बनाने की विधि, भवनों का ढाँचा, पहनावा, बोलने के ढंग और वार्तालाप इत्यादि उन लोगों की संस्कृति- समूह और स्थान के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं।

प्राकृतिक मानव द्वारा निर्मित परिवेश (वातावरण) के साथ तालमेल रखने की योग्यता व्यक्ति की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

$$\text{मानव} \times \text{परिवेश (वातावरण)} = \text{संस्कृति}$$

32.1.1 संस्कृति की धरणा

संस्कृति: जैसा कि पूर्व में बताया गया है संस्कृति वह जीवन-पद्धति है जो एक समूह में समान रूप से मौजूद होती है। आओ अब हम संस्कृति पर काल और स्थान की परिधि में विचार करें।

काल/समयबद्धता: शीतकाल में गर्म वस्त्रों का पहनना और बरसात के मौसम में छतरी लेकर चलना, आदि एक वर्ष की छोटी कालावधि में मानव के व्यवहार में परिवर्तन के उदाहरण हैं। काफी लंबे समय के बाद संस्कृति में कुछ नये तत्वों के समावेश के कारण व्यवहार के तौर-तरीकों में परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए, लगभग दो सौ वर्ष पूर्व रेलें नहीं थीं और सौ वर्ष पहले हवाई जहाज नहीं थे। पच्चीस वर्ष पहले लोग कम्प्यूटर नहीं जानते थे जैसे कि आज उपयोग कर रहे हैं। इन सभी आविष्कारों ने मानवीय जीवन-पद्धति को इस सीमा तक प्रभावित किया है कि इनके बिना आधुनिक जीवन पद्धति असंभव प्रतीत होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि काल या समय लोगों के सांस्कृतिक निर्माण का एक नियामक तत्व है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

दोनों कलाइयां ऊपर उठाकर एक व्यक्ति दूसरे का अभिवादन करते हुए।

स्थानबद्धता: बहुत समय बाद मिलने पर हम अपने मित्रों का अभिवादन करते हैं। फिर भी अभिवादन का स्वरूप, संस्कृति और स्थान की भिन्नता के अनुसार,

अलग-अलग होता है। भारतीय लोग दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं, अंग्रेज हाथ मिलाकर, और तिकोपियाए पालीनेशिया द्वीप के निवासी परस्पर ऊपर को उठी हुई कलाइयों को थामकर अभिवादन करते हैं जो बाहर के व्यक्ति को झगड़े की मुद्रा जैसी लगती है। इस तरह स्पष्ट है कि मानवीय व्यवहार स्थान की भिन्नता के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।

संस्कृति के दो व्यापक घटक होते हैं: एक 'भौतिक' और दूसरा 'अ-भौतिक। भौतिक भाग में वे सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं जो समाज में मानव द्वारा निर्मित, परिवर्तित और परिवर्धित हुई है, जैसे- हल, हँसिया, फावड़े, गेंतियां आदि जो स्पष्ट दिखाई देती हैं।

संस्कृति

भौतिक	अ-भौतिक
भोजन, वस्त्र, आभूषण, भवन (घर), गाड़ियाँ गायन-वाद्य-यंत्र आदि।	प्रतीन-चिह्न, अभिवृत्तियाँ विचार, विश्वास, गीत, नृत्य व संगीत आदि।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

यदि हम निकट से देखें तो पाते हैं कि जिन लोगों का कृषि प्रमुख व्यवसाय है उनके खेती के औजार भी एक समान नहीं होते। पर्वतीय क्षेत्रों में हलों के वजाय कुदाली का प्रयोग होता है। इससे पता चलता है कि समाज की संस्कृति को नियंत्रित करने में वातावरण की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वातावरण के अनुसार मानव के परस्पर व्यवहार की भौतिक प्रस्तुति ही संस्कृति है। परिवेश या वातावरण हर जगह एक जैसा नहीं होता। यह हर जगह अलग-अलग होता है। अतः एक स्थान से दूसरे स्थान की संस्कृति भी परिवेश के परिर्वतन के साथ बदल सकती है।

आइए, अब हम संस्कृति के अभौतिक पहलुओं की चर्चा करें। अभौतिक संस्कृति में प्रतीक-चिह्न, विचार आदि सम्मिलित होते हैं जो परस्पर संबंधों के क्षेत्र में मानव-जीवन को टालते का काम करते हैं। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है मानवीय अभिवृत्तियाँ, मानवीय आस्थाएँ, नैतिक मूल्य और आदर्श। उदाहरण के लिए- विश्वास और आस्थाओं का धार्मिक पद्धतियों पर प्रभाव पड़ता है। मुसलमान लोग एक माह (जो रमजान का महीना माना जाता है) तक उपवास करते हैं। इस अवधि में वे दिन में केवल एक बार शाम को चंद्रमा के दर्शन करने के बाद ही भोजन करते हैं। रमजान

के आखिरी दिन, एक इस विशेष मीठी वस्तु को खाकर उपवास तोड़ते हैं जो अपने आस-पड़ौस के नजदीकी व्यक्तियों में बाँटी जाती है। उसी भांति, जीवन के विभिन्न अवसरों और स्तरों पर भोजन संबंधी विश्वास, आस्थाएँ और प्रतिबंध, हमारी भोजन करने संबंधी आदतों, आचार-विचारों तथा खान-पान को संचालित करते हैं। उदाहरण के लिए, उड़ीसा के लोग 'कार्तिक' मास में सामिष-भोजी पदार्थों (मांसाहार) के भोजन पर पाबंदी रखते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस मास में मांसाहार से परहेज विभिन्न बीमारियों से दूर रखता है और सामान्य रूप से स्वस्थ रहने में मदद करता है। अ-भौतिक संस्कृति का दूसरा उदाहरण नवरात्रि के अवसर पर उत्तर भारतीयों में भोजन पर नियंत्रण के रूप में देखा जाता है। जननी का शिशु के जन्म के बाद चालीस -चालीस दिन तक विश्राम करना, रसोईघर में बिना चप्पल के प्रवेश करना आदि संस्कृति के अभौतिक पहलू के उदाहरण हैं। इनमें से अनेक ऐसे आचार-विचारों के वैज्ञानिक आधार भी पाए गए हैं। उदाहरणतः लगभग प्रत्येक रीति-रिवाज और भोजन के पकाने में हल्दी का प्रायः उपयोग इसके छूत से बचाव के गुण से जोड़ा हुआ बताया जाता है। भारत में लगभग सभी समुदायों में इसका समान रूप से प्रचलन है।

पाठगत प्रश्न 32.1

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

'अ' और 'ब' वर्गों का उपयुक्तानुसार मिलान कीजिए:

'अ'	'ब'
1. संस्कृति का संबंध	1. भौतिक और अभौतिक दोनों पहलुओं से होता है।
2. भवन (घर), एक हल, एक साइकिल इत्यादि	2. एक जीवन-पद्धति होती है।
3. ज्ञान, आस्थाएँ, कला-कौशल आचार-विचार, कानून और रीति -रिवाज, प्रथाएँ आदि	3. भौतिक संस्कृति के उदाहरण हैं।
4. प्रत्येक संस्कृति	4. अभौतिक संस्कृति के उदाहरण हैं।

32.2 संस्कृति की विशेषताएँ

अब हम संस्कृति की अति सामान्य और महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का विवेचन करते हैं। वे हैं:-

1. संस्कृति सार्वभौमिक होती है।
2. संस्कृति स्थिर, टिकाऊ और गतिशील होती है।
3. संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है।

(अ) संस्कृति सार्वभौमिक है: एक उड़िया परिवार बेंगलूर में रहता था। एक बार शाम को जब वे चपाती और दाल का भोजन कर रहे थे तो एक तेलुगु भाषी महिला उनके घर आई। उसे उड़िया परिवार को चावल के स्थान पर चपाती खाते देखकर अति आश्चर्य हुआ। वास्तव में उसके लिए शाम के भोजन में चावल अनिवार्य होता है। यह सोचकर कि उड़िया परिवार के पास (शायद) चावल नहीं रहा है उसने उन्हें आवश्यक तादाद में चावल देने की पहल की। उसके इस आग्रह पर उड़िया परिवार ने कहा कि बात ऐसी नहीं है कि हमारे पास चावल नहीं है बल्कि वे रात्रि के भोजन में चपाती खाने के अभ्यस्त हैं। यह उदाहरण बताता है कि भोजन के सार्वभौमिक होते हुए भी लोग क्या खाते हैं, कैसे इसे पकाते और परोसते हैं आदि। एक समुदाय से दूसरे में भिन्न होता है। संस्कृति सार्वभौमिक और विशिष्ट या व्यक्तिगत दोनों हैं।

मानव की संस्कृति के निर्माता प्राणी के रूप में धारणा संस्कृत को विश्वव्यापी बनाती है और इसे समस्त मानव-समुदाय की एक खासियत बना देती है। सभी मानव अपने जीवन को बनाए रखने के लिए अपने प्राकृतिक वातावरण को अपने अनुकूल बनाने की तकनीक जानते हैं। भोजन-उत्पादन और अपने लोगों में बाँट लेने के तौर-तरीके भी उनके पास है। सभी की निजी संस्थाएँ होती हैं, जैसे परिवार और दूसरे निकट-सम्बन्धियों के समूह आदि। सभी लोगों के पास एक प्रकार के राजनीतिक नियंत्रण और कानून एवं न्याय के अनुरूप न्याय संगत बनाने के तौर तरीके तथा प्रणालियाँ होती हैं। कला-कौशल की विभिन्नताओं के रूप में उन सभी के पास गीत, नृत्य तथा कहानियाँ मौजूद हैं। अपने भावों के संप्रेषण के लिए सभी की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठगत प्रश्न 32.2

निम्नांकित में से सही पर सही (✓) का निशान और गलत पर गुणा (×) का निशान लगाइए:

1. संस्कृति सार्वभौमिक नहीं है।
2. संस्कृति स्थानबद्ध होती है।
3. एक संस्कृति दूसरे संस्कृति से एक समान होती है।
4. संस्कृति की सार्वभौमिकता मानवीय अस्तित्व का अभिन्न अंग है।

(ब) संस्कृति, स्थिर, टिकाऊ और गतिशील हैः संस्कृति समय सापेक्ष होती है। यह समय के अनुरूप बदलती है। दूसरे शब्दों में, यह सतत प्रवाहमान है। संस्कृति की तुलना एक बहती हुई सरिता से की जा सकती है। जिस प्रकार नदी बहती चली जाती है तो एक स्थान पर नदी में बहता हुआ पानी आगे जाता रहता है और उसके स्थान पर दूसरा प्रवाह आ जाता है। यद्यपि नदी यथावत और शाश्वत बनी रहती है। वही संस्कृति भी है। विषय व तत्व बदलते हैं, सुधरते हैं, रूपान्तरित होते हैं और इसी भांति संस्कृति की सरिता प्रवाहित होती चली जाती है। यह एक निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया है और यही सततता संस्कृति को प्रगतिशील एवं गतिशील बनाती है। संस्कृति में परिवर्तन इतनी मुस्तैदी से और चुपके-चुपके आता है कि हम तब तक इसे भाँप भी नहीं पाते जब तक कि हम वर्तमान को भूत पर आरोपित होता नहीं देख लेते। हम अपनी तस्वीर का उदाहरण ले लें। वर्तमान का खींचा गया आपका फोटो का मिलान यदि कुछ वर्षों पूर्व के फोटो से मिलान करें तो आपको संस्कृति में परिवर्तन का आभास हो जाएगा, चाहे वह बालों के स्टाइल के बारे में हो या कपड़ों के डिजाइन के विषय में हों। इन वर्षों में वस्त्रों के पहनावे और बालों के स्टाइल किस तरह बदले हैं, इस बात का इससे हम पता लगा सकेंगे। अपने दैनिक जीवन में हम ऐसे अनेक परिवर्तन देखते हैं। वर्षों पूर्व हमारे समाज में कन्याओं की शिक्षा को प्रोत्साहन नहीं मिलता था जबकि कम उम्र में ही उनकी शादी कर देने पर बहुधा जोर दिया जाता था। लड़कियाँ घरों में पढ़ती थी,और घर गृहस्थी का कार्य सीखती थीं जब तक कि उनकी सगाई और शादी नहीं हो जाती। पिछले कुछ वर्षों से लड़कियां घर की चारदीवारी से बाहर औपचारिक शिक्षा ही नहीं बल्कि उच्च शिक्षा के लिए भी निकल रही हैं। आजकल, अनेक युवा लड़के और लड़कियां अपने-अपने जीवन-साथी चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। इस तरह हम अपनी संस्कृति में कुछ न कुछ नया परिवर्तन देख रहे हैं जबकि इस तरह हम देखते हैं कि हमारी संस्कृति में एक तरफ कुछ नया जुड़ा तो दूसरी तरफ कुछ तत्व प्रचलन से हट गए। इस तरह संस्कृति सदा परिवर्तनशील रहती है।

अब हम कह सकते हैं कि संस्कृति स्थिर, टिकाऊ किन्तु सर्वदा सतत् परिवर्तनशील होती है। एक अन्य उदाहरण से भी यह बात स्पष्ट हो जाएगी। हर जगह शादी-विवाह हुआ करते हैं। किंतु विवाह-पद्धति तथा वैवाहिक प्रथाओं से संबंधित रीति-रिवाज तथा चलन धीरे-धीरे बदल रहे हैं। गुजराती परिवारों में वर्तमान समय और कुछ पीढ़ियों पहले प्रचलित वैवाहिक पद्धतियों के अध्ययन से, उन परिवर्तनों के विषय में अच्छी जानकारी मिल सकती है। अतएव, यह स्पष्ट है कि संस्कृति स्थिर एवं टिकाऊ है तथापि यह गतिशील भी है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठगत प्रश्न 32.3

सही शब्द चुनिए और उपयुक्त शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिए।

(अ) संस्कृति .... है।

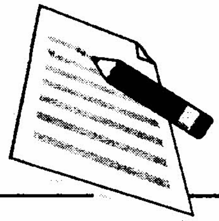

(ब) संस्कृति स्थान और .... है।

(स) संस्कृति में परिवर्तन .... होते हैं।

(द) संस्कृति सदा .... है।

(स) संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है

जब आप दूसरों का अभिवादन करते हो तो दोनों हाथ जोड़ लेते हो। पर क्या आपने कभी नवजात शिशु को भी अन्य लोगों को अभिवादन करने के लिए हाथ जोड़ते देखा है? दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि हमने 'नमस्कार' करने के साथ अभिवादन का तरीका सीखा है क्योंकि हमने अन्य लोगों को इसी तरह अभिवादन करते देखा है अथवा हमारे बड़े-बूढ़ों ने हमें ऐसा ही सिखाया है। पर क्या कोई व्यक्ति एक कौवे को अपना घोंसला बनाना बता या समझा सकता है? बया पक्षी भी अपना घोंसला स्वयं बुनते हैं। इन पक्षियों ने अन्य पक्षियों से घोंसला बनाने की तकनीक नहीं सीखी है। इन्होंने अपने माता-पिता से यह गुण आनुवंशिकता के रूप में पाया है। मानव ऐसा कोई सामाजिक-सांस्कृतिक गुण अपने माता-पिता से उत्तराधिकार में अर्जित नहीं करता है। उन्हें अपने परिवार, समुदाय और समाज, जहां वे रहते हैं, के सदस्यों से इसे सीखना पड़ता है। इस तरह संस्कृति एक सीख या ज्ञान पर आधारित व्यवहार है और यह न तो वंशानुगत अर्जित है और न यह एक मूल प्रवृत्ति परक सहज व्यवहार है। यह मानव द्वारा उस समाज से सीखा या अर्जित किया जाता है जिसमें कि वह पाला-पोसा जाता है। परिणामतः मानव समाज के लिए संस्कृति अनुपम और अतुलनीय है। एक पीढ़ी द्वारा प्राप्त ज्ञान को आने वाली पीढ़ी को एक प्रक्रिया जिसे 'संस्कार' कहते हैं, के द्वारा हस्तान्तरित किया जाता है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

संस्कारीकरण बिना औपचारिक शिक्षा के चलने वाली एक सहज प्रक्रिया है। यह अपने समाज का सदस्य बनने के अपनी संस्कृति को सीखने की प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न-भिन्न होती है। संस्कारीकरण संस्कृति के सभी पहलुओं के शिक्षण और अध्ययन की सतत प्रक्रिया है। यह न तो शारीरिक (भौतिक) क्रियाओं जैसे भोजन, वस्त्रों आदि तक (सीमित है) और न ही हमारे द्वारा बोली जाने वाली भाषा तक ही सीमित है। इसमें नैतिक मूल्य, आदर्श, अभिवृत्तियाँ, नैतिकता एवं मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार की हर वस्तु सम्मिलित होती है। संस्कृति की शिक्षा जन्म से प्रारंभ होती है तथा संपूर्ण जीवन भर सतत् चलती रहती है। भारत में एक भारतीय माता-पिता से पैदा हुए बच्चे यदि बचपन से ही अलग वातावरण या परिवेश में संस्कारित किए जाते हैं तो वे पृथक संस्कृति सीखते या अपनाते हैं। अतः यह ध्यान देने योग्य है कि संस्कृति एक सामूहिक धरोहर है व्यक्तिगत नहीं। यह समाज या उन लोगों से संबंधित होती है जिनका एक समान जीवन-शैली होता है और जो सतत् सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं।

पाठगत प्रश्न 32.4

निम्नांकित में से जो सही है उसके सम्मुख 'सत्य' लिखिए और गलत को सुधारिए:

1. संस्कृति आनुवंशिक रूप से अर्जित होती है।
2. संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है।
3. समाज का सदस्य होने के लिए अपनी संस्कृति को सीखना संस्कारीकरण कहलाता है।
4. समस्त मानव जाति के लिए संस्कृति अनुपम है।

आपने क्या सीखा

- एक जन-समूह द्वारा अपनाई गई जीवन-शैली का समग्र रूप संस्कृति होता है। यह एक जन-समूह को संगठित करती है। एक से दूसरे समूह की भिन्नता को स्पष्ट करती है।
- हमने यह भी सीखा है कि संस्कृति सार्वभौमिक होती है और समय एवं स्थान के सापेक्ष होती है। अर्थात काल तथा स्थानानुसार बदलती है।
- काल और स्थान के आयाम संस्कृति को प्रगतिशील एवं गतिशील बनाते हैं और संस्कृति मानव द्वारा निर्मित होती है।
- यह भी ज्ञात हुआ है कि संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है क्योंकि मानव अपनी संस्कृति से सीखत है। इस भाँति हम कह सकते हैं कि संस्कृति एक ऐसी जीवन-शैली निर्धारित करती है जिसके बिना जीना कठिन होता है। एक अन्य उदाहरण द्वारा आप और स्पष्ट रूप से समझ पाएँगे। जब हम किसी अन्य देश की यात्रा करते हैं तथा दूसरी जीवन-शैली में रहने को विवश होते हैं तो हमें बहुत असुविधा का अनुभव होता है। एक अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के होते हुए उसे पीछे छोड़ना तथा एक नवीन सांस्कृतिक परिवेश को अपनाना बहुत कठिन सा लगता है। यह इसलिए होता है क्योंकि सभी संस्कृतियाँ समान नहीं हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान में भिन्न-भिन्न होती है।
- प्रत्येक समाज की अलग-अलग संस्कृति होती है अथवा हम कह सकते हैं कि संस्कृति भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होती है।
- एक अन्य ध्यान देने योग्य पहलू यह है कि प्रत्येक संस्कृति में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्ततः हमारी संस्कृति हमारे संपूर्ण जीवन, सोच-विचार तथा व्यवहार को प्रकट करती है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठान्त प्रश्न

1. आशय स्पष्ट कीजिए:

(अ) संस्कारीकरण (ब) संस्कृति

2. संस्कृति की परिभाषा लिखिए और उसकी दो प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. संस्कृति की अवधारणा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. 'संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार है'। उपयुक्त उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

शब्दावली

संस्कृति : एक जन-समूह द्वारा अपनायी जाने वाली जीवन-शैली है जिसमें भौतिक और अभौतिक दोनों पहलू शामिल होते हैं।

प्रगतिशील/गतिशील: जो स्थिर न हो। संस्कृति के संदर्भ में यह सतत् परिवर्तनशील होते हैं और ये परिवर्तन समय और स्थान के सापेक्ष होता है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

संस्कारीकरण : एक समाज का सदस्य होने के लिए अपनी संस्कृति को सीखने की सतत प्रक्रिया 'संस्कारीकरण' होती है।

निषेध : वे प्रतिबंधा / रोक जो समाज द्वारा स्वीकृत नहीं हैं।

प्रवाह : परिवर्तनों की सततता अथवा निरंतर प्रवाहमानता।

सार्वभौमिक: जो प्रत्येक मानव समुदाय में विद्यमान है।

अर्जित : जो परंपरा से प्राप्त न हो अपितु एक समय में प्रयत्न द्वारा प्राप्त की गयी हो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

अ	ब
1	1
2	3
3	4
4	2

33

भारतीय सांस्कृतिक विरासत

पहले पाठ में हमने संस्कृति के अर्थ, इसकी अवधारणा और संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं की विवेचना की है। इस पाठ से हमें अपने देश की सांस्कृतिक विरासत के विषय में जानकारी प्राप्त होगी। हमारी पुरानी रीति-रिवाजों, प्रथाओं के विषय में जानकारी हासिल करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इनके ज्ञान और समझ से हम अपनी वर्तमान संस्कृति को समझ सकते हैं। हमारा भोजन, वस्त्र (पहनावा) भाषाएँ, संगीत और कला-कौशल के प्रकार आदि सभी हमारी संस्कृति के अंग हैं जो कलांत में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संक्रान्त होते चलते हैं। ये सभी, समय रूप में एक दूसरे में पिरोये हुए होकर एकबद्ध हैं और इनसे भारतीय संस्कृति को, सबसे अलग विशिष्टता प्राप्त है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- सांस्कृतिक विरासत का अर्थ बता सकेंगे;
- संस्कारीकरण क्या होता है? इसकी व्याख्या कर सकेंगे; और
- प्राचीन से अर्वाचीन तक की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का विवेचन कर सकेंगे।

33.1 सांस्कृतिक विरासत का अर्थ

एक राष्ट्र उसकी प्राचीन और बर्तमान उपलब्धियों के द्वारा जाना जाता है। प्राचीन उपलब्धियाँ, जो समय के प्रहार से शेष रह जाती हैं, विरासत बन जाती हैं। इस भांति विरासत संस्कृति की वह तत्व है जो संतति भावी पीढी द्वारा सामूहिक रूप से अर्जित की जाती है। कोणार्क का 'सूर्य मंदिर' मिस्त्र के 'पिरामिड,' 'कुंभ मेला', अनेक ' धार्मिक रीति-रिवाज, आस्थाएँ और विश्वास, जोकि हमारे दैनिक जीवन से संबद्ध हैं, तथा वेद आदि हमारी विरासत के कुछ उदाहरण हैं।

हम, भारत के लोग, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित और छोड़ी गई एक सम्पन्न सांस्कृतिक विरासत के उत्तराधिकारी हैं।

> भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल सबसे अधिक प्राचीन विरासतों में से ही एक नहीं है अपितु यह सर्वाधिक विस्तृत तथा विविधतापूर्ण विरासतों में भी एक है।

इसके संपूर्ण इतिहास में, विभिन्न संस्कृतियों के लोग या तो अस्थाई रूप से भारत के सम्पर्क में आते रहे हैं अथवा इसे एक विविधतापूर्ण विशिष्ट भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रदान करते हुए यहाँ आकर स्थाई रूप से बस गए हैं। वास्तव में भारत की संस्कृति अनेक जीवन-पद्धतियों का समन्वय प्रस्तुत करती है। अनेक पीढ़ियों से भौतिक और बौद्धिक घटकों ने भारत को अपनी संस्कृति के बहुत से पहलुओं जैसे खानपान, वस्त्र, आभूषणों, वास्तुकला, शिल्प, भाषा, साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नृत्य, संगीत कला-कौशल और चित्रकला, नैतिक मूल्यों तथा प्रथाओं आदि द्वारा एक राष्ट्र के रूप में अनुपम पहचान दिलाई है। क्रियात्मक्ता के इन सभी क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियाँ जो समय के बीहड़ों को पार करते हुए हमें आज प्राप्त हुई है, हमारी विरासत कही जा सकती है। आगे के भाग में हम उनमें से कुछ का विवेचन करेंगे।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

33.2 पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति–भारत का साहित्य

हम, भारतीय लोग, विश्व की सबसे प्राचीन साहित्यिक विरासत, तथा साहित्य के अनुपम भंडार जिन्हें 'वेद' कहते हैं, के उत्तराधिकारी एवं अर्जनकर्त्ता हैं ये ईसा से 1500 वर्ष पूर्व के माने जाते हैं जबकि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने खगोलशास्त्रीय साक्ष्यों के आधार पर वेदों के प्रारंभिक भाग की रचना का काल ईसा के जन्म से 200 वर्ष पूर्व माना है।

शब्द 'वेद' 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'ज्ञान'। वेदों में निहित संपूर्ण

ज्ञान मौखिक रूप से सुनकर पीढ़ियों तक सुरक्षित रखा जाता रहा। इस प्रणाली के कारण वेदों को 'श्रुति' भी कहते हैं जिसका अर्थ होता है वह वस्तु जो सुनी गई हो अथवा व्यक्त की गई हो। यह विश्वास किया जाता है कि वेदों को किसी ने रचा नहीं है। इनको ऋषियों द्वारा सुनाया गया अथवा ये उनके अनुभव के फलस्वरूप ऋषियों के मस्तिष्कों में आँखों की गहराई में दैवी रहस्य बनकर प्रगट हो गए। ऋषियों को जो अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई उसे वे भावी पीढ़ी में प्रेषित करने का माध्यम मात्र बने। वे उनके द्वारा मौखिक रूप से सुनाए गए और उन्हें सुनकर शिष्यों द्वारा ग्रहण किया गया। यही कारण है कि वेदों का दूसरा नाम 'श्रुति' भी है।

> वेदों की संख्या चार है। ये हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, 'साम' और 'अथर्व'। ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन धर्मग्रंथ है। यह एक विरासत है अकेले भारत की ही नहीं अपितु संपूर्ण मानवता की।

विशेष रूप से 'ऋग्वेद प्रार्थनाओं की रचना है, यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी संस्कारों की विवेचना है। सामवेद 'ऋग्वेद' के भाग की पुनरावृत्ति है विशेष रूप से उस संगीत से संबंधित है जिसका यज्ञ के संस्कारों में उपयुक्त अवसरों पर गान किया जाता है। अथर्व वेद की विषय-वस्तु में वह समस्त ज्ञान है जो कालांतर में विज्ञान जाना गया और वह भी है जो मानव-व्यवहार के संदर्भ के लिए चरित्रिक आदर्श और नैतिक नियमों के रूप में मान्य है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

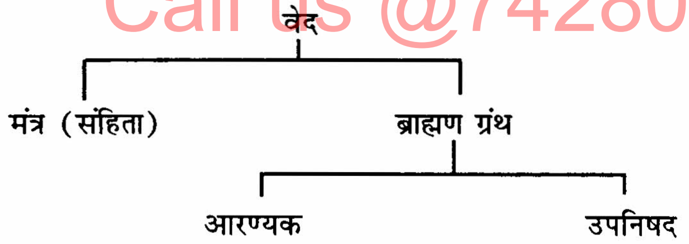

प्रत्येक वेद दो भागों में विभाजित है- 'मंत्र' और 'ब्राह्मण' (गद्यमय पूजा विधियाँ)। 'मंत्र' भाग को 'संहिता' भी पुकारा जाता है। 'ब्राह्मणों' में यज्ञ संबंधी पूजा-विधियों की जानकारी है। पूजा-विधियों से संबंधित संस्कारों को सांकेतिक व्याख्याओं पर आधारित ध्यान की सीख हमें आरण्यकों में प्राप्त होती है। मौटे तौर पर उपनिषदों को जीवन और जीवन के बाद की विकट समस्याओं के समाधान के लिए दार्शनिक दस्तावेजों के रूप में वर्णित किया जा सकता है। 'वेद' शब्द का मतलब हम केवल 'मंत्र' अथवा 'संहिता' भाग ही जानते हैं। प्रत्येक संहिता के अपने निजी ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् हैं जिनके अलग-अलग और स्वतंत्र नाम है।

प्रत्येक संहिता कई भागों में विभाजित है। ऐसा एक भाग 'मंडल' कहलाता है। 'मंडल' 'सूक्तों' (परस्पर संबंधित मंत्र-समूह) में विभक्त हैं और एक सूक्त में अनेक मंत्र-ऋचाएँ हैं।

महत्व की दृष्टि से दूसरी कृति ''भगवद्‌गीता'' है। यह महाभारत का एक अभिन्न अंग है, जो श्रीकृष्ण (भगवान विष्णु के अवतार जाने जाते हैं) और राजकुमार योद्धा अर्जुन के बीच परस्पर ज्ञान-चर्चा रूप में निबद्ध है। दोनों की यह वार्ता युद्ध भूमि के मध्य हुई। इसमें जीवन तथा मृत्यु, कर्त्तव्य, भक्ति, ज्ञान, ध्यान, वैराग्य आदि की समस्याएँ और उनके समाधानों की विवेचनाएँ निहित हैं। इस महान ग्रंथ की मूलधारणा मनुष्यता और कर्त्तव्य के पूर्ति आत्म-रहित त्याग और भक्ति है। 'श्रुति' से अलग साहित्य का एक दूसरा अंश 'स्मृति' है जिसका सामान्य अर्थ 'जो स्मरण या याद किया गया'' होता है।

'श्रुति' से संदर्भ दर्शाते हुए 'स्मृति' में ''श्रुति' की मूल शिक्षाओं की व्याख्याएँ विवेचनाएं और प्रमाण या उदाहरण दिए गए हैं। समाज को नियमबद्ध रखने के लिए इनमें नियम दिए गए हैं। स्मृतियों में सबसे प्रमुख 'मनु-स्मृति' है। दूसरी स्मृतियाँ-पाराशर, याज्ञवल्कय, वशिष्ठ आदि की हैं। ये लगभग एक सौ की संख्या में हैं।

इसके बाद 'रामायण' और 'महाभारत'' आते हैं जिन्हें तकनीकी रूप से इतिहास ग्रंथ कहा जाता है। उनमें दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण राज-परिवारों 'इक्ष्वाकु'' और ''कुरू'', जिन्होंने भारत के भाग्य का निर्माण किया है, का इतिहास है। यद्यपि मूलतः इनमें 'राम' जो इक्ष्वाक' वंश के थे तथा 'कौरव-पांडव' जो 'कुरू' वंश के थे, की कथाएँ हैं, ये ग्रंथ भारतीय संस्कृति के मूलाधार के रूप में श्रद्धा पूर्वक मान्य हैं।

इससे आगे 'पुराण' आते हैं, इनकी संख्या 36 है अठारह महापुराण तथा आठरह उपपुराण। इनमें ठोस उदाहरणों द्वारा प्रमुख मानव मूल्यों की व्याख्या करने वाली ऐतिहासिक घटनाओं और महापुरुषों की कहानियाँ संग्रहित हैं। बुद्धधर्म की जातक कथाएँ तथा जैन साहित्य बुद्ध भगवान तथा महावीर स्वामी के अनेक अवतारों की संदर्भ में चर्चा से परीपूर्ण हैं और इनमें परम मानवीय संबंधों को दर्शाने वाले जीवन मूल्यों की विवेचनाएँ की गई हैं।

साहित्य का एक दूसरा अंश 'आगम'' नाम से जाना जाता है। ये पंथ-विशेष के धर्मग्रंथ जैसे हैं, जिनमें विशेष देवी-देवताओं की उपासना पद्धतियाँ तथा उपासकों के लिए अनुशासन-सिद्धान्तों के वर्णन हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

प्राचीन भारत के विभिन्न कालों में छह दर्शनों (षट्दर्शन) की धूम रही। वे 'दर्शन' अर्थात, 'सत्य के दर्शन' के रूप में जाने जाते हैं। ये गौतम ऋषि का 'न्याय', 'कणाद' का वैशषिक' 'कपिल' का 'सांख्य' 'पतंजलि' का 'योग', 'जैमिनी' का 'मीमांसा', और 'बादरायण या व्यास' का बेदान्त' है। 'न्याय और 'वैशषिक' निर्माण के अणु सिद्धान्त पर आधारित धर्मग्रंथ है। 'साख्य' चेतन 'आत्मा' और अचेतन 'पदार्थ' को रचना का मूल तत्व स्वीकार करता है। 'योग' मन और शरीर पर नियंत्रण की व्याख्या करता है। ''मीमांसा'' वैदिक धर्म-पद्धतियों का समर्थक है। वेदान्त में वेदों का सारतत्व निहित है जो उपनिषदों पर आधारित है।

गीता, ब्रह्मसूत्र (व्यास) और-वेदान्त- ये तीनों 'प्रस्थान-त्रया' कहलाते हैं जिसका अर्थ है- सर्वोच्च लक्ष्य की ओर ले जाने वाले तीन मूल धर्मग्रंथ। वेदान्त दर्शन द्वारा उठाई गई मूल समस्याओं के तर्कपूर्ण समाधान सुझाता है।

सहस्रों सदियों से हिंदू जीवन-पद्धति के नियामक माने जाने वाले इन आधारभूत धर्मग्रंथों के अलावा प्राचीन भारत की काल और स्थाननिरपेक्ष कुछ अन्य साहित्यिक कृतियाँ भी हैं। वे 'विष्णु शर्मा' कृत 'पंचतंत्र', कल्हण कृत 'रजतरिंगणी', 'बाणभट्ट' कृत 'कादम्बरी' 'कालिदास' कृत 'मेघदूत,' 'चाणक्य' कृत 'अर्थशास्त्र', 'पाणिनी' कृत 'अष्टाध्यायी' (व्याकरण का विवेचन) तथा 'भरत' का 'नाट्य शास्त्र' आदि हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विवेचन भी हुए हैं जैसे : औषधि' तथा 'शल्य' चिकित्सा पर 'चरक' और सुश्रुत संहिताएँ तथा खगोलशास्त्र की बराहमिहिर कृत 'बृहत संहिता' आदि।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

कुछ समय पूर्व भारतीय इतिहास में मुगल शासक भी साहित्य के महान पोषक रहे हैं और उन्होंने इसके विभिन्न अंगों के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ प्रदान की हैं। सम्राट ही नहीं आपितु शाही हरमों की बेगमें, हुमायूँ की माता से लेकर औरंगजेब की प्रसिद्ध पुत्री जेबुन्निसा तक, कला और साहित्य की संरक्षक रही हैं। बाबर और जहाँगीर ने अपने स्वयं के संस्मरण लिखे हैं। अकबर के संरक्षण में अनेक विचारक और विद्वान पैदा हुए तथा उन्होंने अनेक सुरुचिपूर्ण एवं महत्वपूर्ण कृतियों की रचनाएँ की। अकबर के दरबार में कवियों तथा साहित्यकारों की विद्वत्सभा एकत्रित होती थी। अबुल-फजल अकबर के मित्र दार्शनिक और सलाहकार थे जिन्होंने 'दीन-ए-अकबरी' की रचना की है। विद्वान शाहजादे 'दारा' ने प्रमुख उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया। भारत के पश्चिम से संपर्क स्थापित होने से लेकर उन्नीसवीं सदी के अर्धशती के मध्य तक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।

भारत के महापुरुषों, जैसे राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी तथा अन्य अनेक महा पुरुषों ने भारत की सामाजिक प्रथाओं जैसे ब्राह्मणों के धार्मिक पूजा पाठ, जाति-बंधन विधवा तथा नारियों की दुर्दशा, की आलोचनात्मक जांच-परख करने की ओर विशेष ध्यान दिया और भारतीय समाज को सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों से छुटकारा दिलाने का भारतीय संस्कृत के अनेक ग्रंथों के अंगरेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए। अंग्रेजी भाषा के व्यापक प्रचार से नवीन विचारधारा तथा पाृश्चात्य विचार को क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य में प्रस्तुत किया गया। साहित्य की विभिन्न विद्याओं, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध तथा पद्य को समृद्धि प्राप्त हुई। बीसवीं सदी के आगमन के साथ राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता संघर्ष ने भारतीय साहित्य को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कर दिया।

आज हम अपने साहित्यों को यथार्थ और एक व्यापक ग्लोबल दृष्टिकोण के भावों से ओतप्रोत पाते हैं। राष्ट्रीय भावना और देशनुराग ने वर्तमान साहित्य के उत्थान का गंभीरता से प्रभावित किया और परिणाम यह रहा कि इस युग में सर्वोत्कृष्ट रचनाएं रची गई। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्यम भारती, दिनकर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू (कुछ थोडे नाम दिए जा रहे हैं,) अदि सामर्थ्यवान लेखकों की मंडली इस परिदृश्य की अग्रणी बनी जिनकी रचनाएं आज हमारी विरासत का एक अंग बन चुकी है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

गांधी, नेहरू, टैगोर, विवेकानंद तथा दिनकर आदि के फोटो दिए गएं।

33.3 नृत्य एवं संगीत

राजाओं और विद्वानों द्वारा संरक्षित नृत्य एवं संगीत सदा से ही भारतीय संस्कृति में प्रसिद्ध रहा है। फिर भी, अठारहवीं सदी के पहले चतुर्थंश में मोहम्मद शाह ने उदारतापूर्वक संगीत को संरक्षण दिया। सिद्धहस्त संगीतकार अदारंग और सदारंग प्रसिद्ध वीणावादक हुए। तंजोर (दक्षिण) के राजा तुला जी स्वयं एक मंजे हुए संगीतकार थे। उन्होंने उदारतापूर्वक संगीतज्ञों को संरक्षण दिया। उन्होंने संगीत पर एक प्रसिद्ध पुस्तक 'संगीत सारामृत'' की रचना की। तंजोर के त्यागराज के भजन(भक्ति संगीत) दक्षिण भारत में बहुत मशहूर हैं।

वर्तमान भारत में संगीत के साथ नृत्य को भी प्रोत्साहित किया गया। 'कथकली,' 'मणिपुरी', भारतनाट्यम, तथा 'ओडिसी' की पंरपराओं को महान, कलाकार रूक्मणी देवी, मेनका, गोपीनाथ (भारतनाट्यम) मैडम सिमकी (कथकली) राजकुमार तथा प्रिया गोपाल (मणिपुरी), रघुनाथ पाणिग्रही, संयुक्ता पाणिग्रही युगले (ओडिसी) तथा उनके गुरू केलु चरण महापात्र ने नृत्य और संगीत दोनों को अखिल भारतीय स्तर एवं विदेशों तक में बहुत प्रसिद्धि प्रदान की है। भारत लोकनृत्य और लोकगीत के क्षेत्रों में बहुत संपन्न है। शास्त्रीय नृत्यों के साथ लोकनृत्य भी फल-फूल रहे हैं। प्रसिद्ध और जाने-माने लोकनृत्यों में 'भील नृत्य' 'संथाल नृत्य' गाजर (बंगाली), कजरी (यू. पी. तथा बिहार) तथा अहीर-नृत्य (यू.पी), उड़ीसा का हाऊ नये-नये कितने जमाने से भारत के लोगों का मनोरंजन करते चले आ रहे हैं। छड़ी, तलवारों द्वारा किया जाने वाला वीर-नृत्य भी भारत भर में खूब लोकप्रिय हैं। कुछ आदिवासी लोगों के नृत्य बेहद आकर्षक हैं।

भारत के लोकनृत्यों और दूसरे नृत्यों पर अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। पश्चिमी बंगाल के "शांतिनिकेतन" की तरह अन्य अनेक संस्था नृत्य, संगीत तथा अन्य कला-कौशलों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रही हैं। संगीत भी नृत्य की पद्धतियों के अनुरूप ढला और बुना गया है। भारत सरकार भी इस दिशा में बहुत सारा कार्य कर रही है। साहित्य अकादमी (जानी-मानी राष्ट्रीय अकादमी) संगीत नाटक अकादमी (संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी) तथा ललित कला अकादमी (ललित कलाओं के लिए अकादमी) भारत सरकार द्वारा कला और संस्कृति के विकास के लिए स्थापित कुछ विशिष्ट एवं प्रमुख अकादमिक संस्थाएं हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठगत प्रश्न 33.1

कालम 'अ' का 'ब' कालम से मिलान कीजिए।

'अ'	'ब'
1. अदारंग और सदारंग	1. ओडिसी
2. रघुनाथ पाणिग्रही और संजुक्ता पाणिग्रही	2. कथकली
3. रुकमिनी देवी	3. वीणा
4. मैडम सिमकी	4. भरत नाट्यम

33.4 कला और चित्रकला

प्राचीन भारत की चित्रकारी सभी कालों में अभिनव रही है। अजन्ता और ऐलोरा की गुफाओं तथा उसी तर्ज पर ग्वालियर के 'बाघ' की गुफाओं की दीवारों एवं छतों पर बनी फ्रस्को चित्रात्मक कलाएं आज भी प्रशंसनीय एवं आकर्षक हैं। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण निर्मितियों में हाथियों और नर्तकों की महिला संगीत कारों के साथ शोभा-यात्रा है। मधुबनी (बिहार) की मधुबनी चित्रकारियों तथा उड़ीसा की पाट्टा कला कृतियाँ प्राचीन कला-कौशल तथा चित्रकारी के सुंदर उदाहरण हैं। राजपूत चित्रकारियाँ, मार्मिक, सुकुमार और शांत तथा निर्मल हैं। उनमें धर्म से अभिन्न लगाव झलकता है।

मुगल काल में ललित कला महत्वपूर्ण उत्कर्ष के स्तर पर जा पहुँची थी। ललित कलाओं के प्रेमी होने के कारण मुगल सम्राटों ने नई-नई तकनीक और तरीकों का संरक्षण दिया जिनमें फारसी और भारतीय तत्वों का सम्मिश्रण, भलीभांति दिखाई देता है, कला-कौशल के इस संश्लेषण ने तदयुगीन चित्रकला, वास्तुकला, कशीदाकारी, आभूषणों और धातु की कारीगरी पर गहरी छाप छोड़ी है। अकबर के काल में चित्रकला ने विलक्षण प्रगति की। उसकी व्यक्तिगत अभिरुचि, उदार कलात्मक प्रकृति, विदेशी कलाकारों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण उसकी धार्मिक सहिष्णुता, तथा हिंदुओं के साथ सक्रिय समागम उसके युग की चित्रकारियों में ध्यान देने योग्य हैं। जब अकबर फतेहपुर सीकरी की अपनी नई राजधानी में था, उस समय चित्रकला के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य हुए। इस युग की सभी कलात्मक रचनाओं में विलास की गंध है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

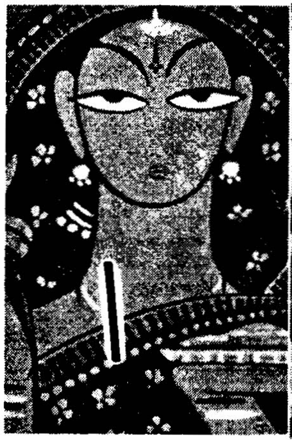

मुगलों परामव के बाद परंपरागत निरंतरता गायब हो गई। रचनात्मक शक्ति और वास्तविक काल की सराहना का संक... मानो, पराजित और विलीन हो गया। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में कला ... न के क्षेत्र में जो नई शुरूआत

सक्रियता से हुई वह मुख्यत: बंगाल पुनर्जागरण के द्वारा हुई। फिर धीरे-धीरे यह देश के अन्य भागों में फैली। रवि वर्मा और एम0 एफ0 हुसैन कलाकारो ने (फोटो दिया. ..) जिन्होंने चित्रकला के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है, का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

33.5 वास्तु कला

प्राचीन भारत साहित्य की तरह मूर्ति-शिल्प और वास्तुकला के क्षेत्र में भी उतना ही समृद्ध रहा है। देवगढ़ का 'विष्णु मंदिर', कोणार्क का 'सूर्य मंदिर', पुरी का सुप्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर प्राचीन भारतीय वास्तु-कला के रत्नों- की भांति प्रशंसनीय हैं। हल्के पीले रंग के रंगीन बलुई पत्थरों के बने हुए बुंदेलखंड में खजुराहो के मंदिर आज भी, प्राचीन भारत की वास्तुकला की उत्कृष्टता के घनघोर साक्ष्य के रूप में खड़े हुए हैं। माउन्ट आबू के दिलवारा जैन मंदिर मूर्तिकला के सौन्दर्य के सर्वाधिक अनुपम, समृद्ध और लालित्यपूर्ण नमूने एवं चित्रण हैं। उड़ीसा के मंदिर भारतीय वास्तुकला के क्षेत्र में विशेष महत्व रखते हैं। बिना खंभों के **वितान** (हॉल) एक सजावट युक्त भीतरी भाग और अत्यंत शिल्पयुक्त सजा हुआ **बाहय** भाग उड़ीसा के मंदिरों की अभिनव विशेषताएँ हैं। कोणार्क के सूर्य मंदिर तथा पुरी के जगन्नाथ मंदिर के अलावा भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर और राजारानी मंदिर इनमें सबसे अधिक सुन्दर हैं। चित्तौड़गढ, ग्वालियर के शानदार और मजबूत किले, जोधपुर का विशाल किला, जयपुर के हवामहल, आमेर का महल तथा ,उदयपुर, जयपुर ग्वालियर के महल, जैसलमेर, कोटा, उदयपुर कस्बे भारत के वास्तुकला के कौशल के कुछ अन्य उदाहरण है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

कोणर्क के मंदिर का चित्र

मुगलों के आगमन के साथ भारतीय वास्तुकला का एक नए सोपान में प्रवेश हुआ जिसमें दिल्ली के सुल्तानों के खुरदरे और साधारण कार्य को फारसी प्रभाव देकर उसे मुलायम और आकर्षक बनाया गया। मुगल काल में वास्तुकला ने बहुत ऊँची चोटी का स्थान प्राप्त किया। मुगल स्थापत्य कला में फारसी और भारतीय शैली का खूबसूरत मिश्रण स्पष्ट प्रकट होता है। फतेहपुर सीकरी का गोल गुंबज, आगरा का ताजमहल, लाल किला, दीवान ए- आम, दिवान- ए- खास और जामा मस्जिद इस शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुगल लोग बाग बगीचों के लिए प्रसिद्ध थे। फारसी शैली के अनुसार, बागों की डिजायन ज्यामिति के अनुकूल होकर उनमें कृत्रिम झीलें, नालियाँ, तालाब, तथा पानी के झरने होते थे जो मुक्त रूप से बनाए जाते थे। इनमें दूसरा महत्वपूर्ण नव-निर्माण विभिन्न स्तरों पर चबूतरों का बनाना होता था।

ब्रिटिश शासन काल में, पाश्चात्य वास्तुकला की शैलियाँ लोकप्रिय हुईं और संपूर्ण देश में उनका प्रसार हुआ। बीसवीं सदी के आरंभ में, भारतीय वास्तु शास्त्र में दो भिन्न कलाकारों के समूह प्रकट हुए। पहला पुनर्जीवित करने वाला समूह जो स्वदेशी वास्तुकला के पुनर्जीवन का लक्ष्य लेकर उदित हुआ था ; और दूसरा प्रगतिशील और आधुनिक समूह जिसका पाश्चात्य नमूनों की ओर झुकाव था। दूसरा अधिक लोकप्रिय हुआ।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

कलकत्ते का विक्टोरिया मैमोरियल तथा 'नई दिल्ली' इंजीनियरों द्वारा डिजायन किये गए थे। पाश्चात्य वास्तुकला के विस्तार के बावजूद अनेक भारतीय राजकुमारों और नबाबों ने परंपरागत भारतीय शैली के कुछ भवन तैयार कराए। आधुनिक शानदार भवनों में उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, मैसूर तथा अन्य दूसरे स्थानों के शानदार भवन भारतीय कुशल वास्तुकारों की कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं। हरिद्वार, उज्जैन, वाराणसी और महेश्वर के स्नान करने के लिए बने हुए घाट, मथुरा के मंदिर, इंदौर का जैन कांच महल (मंदिर), दिल्ली का बिरला मंदिर, मध्य प्रदेश के नागदा में बना 'विष्णु मंदिर' आदि ऐसे हैं जिन पर पाश्चात्य विचारों का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। ये वर्तमान युग में भारतीय स्थापत्यकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

33.6 मूर्तिकला / मूर्ति शिल्प

मथुरा और सारनाथ के शिल्पकार समूहों ने मूर्तियों के भौतिक सौन्दर्य, तथा उनकी मुख-मुद्राओं की प्रभाविता पर विशेष ध्यान दिया। विष्णु, शिव, बुद्ध और अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां बारिकी से हर बातों को ध्यान में रखकर तराशी गयी थीं। उड़ीसा (पुरी, कोणार्क, भुवनेश्वर आदि) के मंदिरों के भीतर पाए जाने वाली मूर्तियाँ

एक लयात्मकता तथा सौन्दर्य की चेतना से विकसित की गई है।

वर्तमान भारत ने प्राचीन और मध्ययुगीन मूर्ति कला को संभाल कर रखा है किंतु समकालीन भारत में मूर्तिकला के क्षेत्र में प्रगतिशीलता का कोई उल्लेखनीय चिह्न नहीं दिखाई देता।

पाठगत प्रश्न 33.2

उन स्थानों के नाम लिखिए जहाँ निम्नांकित स्थित है,

(अ) सूर्य मंदिर (ब) बिक्टोरिया मैमोरियल

(स) हवामहल (द) ताजमहल।

33.7 आदर्श प्रतिमान और जीवन–मूल्य

प्रत्येक संस्कृति में कई तरह के पथ-दर्शक नियम होते हैं जो व्यक्ति और समूहों को विशेष स्थितियों में उनके अनुरूप मार्गदर्शन करती हैं। एक आदर्श प्रतिमान एक विशेष दर्शक का काम करती है यह हमें कौन सा कार्य करने योग्य है और उपयुक्त है को, बताकर खास परिस्थितियों तथा समुचित व्यवहारों की सीख देती है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

दूसरी ओर जीवन-मूल्य अधिक समान्य 'गाइडलाइन्स' या पथप्रदर्शक होते हैं। जीवन-मूल्य एक ऐसा विश्वास है जो यह बताता है कि अमुक वस्तु अच्छी और करणीय है तथा अमुक नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्या महत्वपूर्ण और क्या उपयुक्त है और क्या करने या क्या न करने योग्य है।

अनेक '**नॉर्म्स**' अथवा आदर्श प्रतिमान मूल्यों की प्रतिबिम्ब होती हैं। अनेक कई तरह की प्रतिमाने को एक ही जीवन मूल्य को व्यक्त करते हुए देखा जा सकता है। कुछ प्रतिमान और मूल्य मानव-समाज के संचालन के लिए अनिवार्य और महत्वपूर्ण होते हैं।

प्राचीन भारत के विचारकों द्वारा विशेष परिस्थितियों में लोगों को अपने आपसी संबंधों के चलाने या बनाए रखने के लिए खास 'गाइडलाइन्स' या मार्गदर्शन देने के लिए बहुत अधिक ध्यान दिया गया था।

प्राचीन भारत के जीवन-मूल्य और चलन बहुत महत्वपूर्ण थे। ये रीतियाँ या चलन हमें

शादियों, धार्मिक कृत्यों तथा भाषाओं के प्रयोग में आसानी से दिखाई दे जाते हैं। उदाहरणत: गृह-सूत्र के अनुसार निर्धारित है कि आगे वर्णित धार्मिक या पूजा-कार्य विवाहोत्सव के लिए अनिवार्य हैं, जैसे कन्यादान, अग्नि स्थापना, होम, पाणिग्रहण, लज्जाहोम, अग्नि परिणयन तथा सप्तापदी ये धार्मिक संस्कार या कृत्य परंपरागत विवाहोत्सव के एक अभिन्न अंग होते हैं। इनके अतिरिक्त 'लोकाचार' अर्थात समुदाय या समाज में चलन में आई हुई रीति-रिवाजों का भी पालन किया जाता है। यदि इनके विषय में कोई संदेह होता है तो बड़ी-बूढ़ी माताओं से प्राय:, परामर्श लिया जाता है। यही चलन आदिकाल से चला आ रहा है।

समस्त मानव समाजों में अपने-अपने धार्मिक रीति-रिवाजों की मान्यताएँ हैं जिन्हें उनके सदस्यगण महत्वपूर्ण मानते हैं, भारतीय समाज में धार्मिक कृत्यों या रीति-रिवाजों पर कुछ अधिक और ऊँचे दरजे का बल दिया जाता है। देवी-देवताओं की दैनिक पूजा के अतिरिक्त चलते रास्ते, उत्सवों, तीर्थ-यात्राओं आदि से संबंधित असंख्य रीति-रिवाजें हैं। उदाहरण के लिए बिना किसी घोषणा या निमंत्रण के, हरिद्वार तथा प्रयाग जैसे विशिष्ट स्थानों में कुंभ मेले जैसे विशिष्ट अवसरों पर लाखों लोग भारत के कोने-कोने से इकट्ठे होकर समागम करते हैं। इस रीति के प्रति लोगों के सोच-विचार, जीवन मूल्य और आस्थाएँ आज भी वही है जो वर्षों पहले थीं। भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई धार्मिक रीति-रिवाजे तथा जीवन मूल्य लगातार 'समन्वय'' की ओर सक्रिय हैं जिसका भाव है आपस में तालमेल तथा मेलभाव बढ़ाना। धार्मिक रीति-रिवाज समय-समय पर सुधरते रहे हैं, परंतु विभिन्न नए वातावरणों विविधतापूर्ण जातिगत सुधारें के बावजूद भारतीय संस्कृति में जीवन-मूल्यों और रीति-रिवाजों की निरंतरता पर मूल रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

33.8 विज्ञान और प्रौद्योगिकी

प्राचीन भारत में वेदों के अध्ययन के अतिरिक्त अनेक अन्य विषय जैसे खगोल शास्त्र, ज्योमेट्री, अर्थमेटिक, **भैषज** विज्ञान, चिकित्सा, (आयुर्वेद) कृषि, सैन्य विज्ञान (धनुर्विद्या) आदि भी प्रचुर अभिरुचि के साथ पढ़े जाते थे। वैदिक जीवन-पद्धतियों के अनुसार निर्धारित आकार और प्रकार ज्यामतीय रीति से बनी वेदी पर यज्ञ किए जाते थे। इस आवश्यकता के कारण ज्योमेट्री विज्ञान को बढ़ावा मिला। पूर्व पुजारियों ने बड़े-बड़े वर्गाकार आयतों से आयताकर तथा आयतों से वर्गाकार बनाने के नियम बनाए तथा वर्गों एवं आयतों से त्रिभुज और वर्गों के समाज वृत्त आदि खींचने के तरीके खोज निकाले। बौद्धयन एक गणितज्ञ थे। वृद्धगर्ग लगधा, आर्यभट्ट, खगोलशास्त्रीयों आदि

Notes

का भारत में विज्ञान के अध्ययन में अमिट योगदान है। आर्यभट्ट के दो महान वैज्ञानिक कृतियाँ हैं- ''आर्यभट्टीय'' और ''सूर्य-सिद्धान्त।'' वे ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है। उन्होंने सितारों (ग्रहों) की गतियों की विवेचना की और सूर्य एवं चंद्र ग्रहणों के कारणों का विश्लेषण किया। इससे भी अधिक, आर्यभट्टीय' में, बीजगणित, ज्योमेट्री, अंकगणित तथा त्रिकोणमिति का ज्ञान भी निहित है। इसमें अंकों पर भी प्रकाश डाला गया है। विज्ञान और गणित के लिए 'शून्य' की धारणा उनका अप्रतिम एवं अमिट योगदान है।

'वाराह मिहिर' उस युग के दूसरे वैज्ञानिक थे। उन्होंने सुप्रसिद्ध कृति बृहत् संहिता' की रचना की जिसमें वनस्पति शास्त्र, भूगोल तथा अन्य अनेक विषयों का अध्ययन सम्मिलित है। किंतु उनका प्रमुख एवं आज भी विषय 'खगोल शास्त्र' है।

खगोलशास्त्र और गणित के अलावा गुप्त काल में भैषज विज्ञान ने भी अदभुत उन्नति की। वृद्ध-वाग्भट्ट उस युग के महान चिकित्सक थे। उनके द्वारा अपनायी और प्रचारित की गई औषध विज्ञान की प्रणाली वही थी जो 'चरक' की है। वह प्राचीन भारत की औषध प्रणालियों में से एक प्राधिकृति प्रणाली मानी जाती है। औषध विज्ञान के आयुर्वेद विज्ञान में ''धनवन्तिरी'' एक दूसरे महान विद्वान थे।

'ब्रह्मगुप्त' उस युग के एक अन्य सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे। उन्होंने 'शून्य' के प्रयोग' की खोज की तथा दशमलव' प्रणाली का पांडित्यपूर्ण विवेचन किया। इन दो खोजों से गणित के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न हुई।

यद्यपि भारत ने प्राचीन युग में विज्ञान के क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की थी परंतु मध्ययुग में इसे बहुत क्षति उठानी पड़ी। परंतु पश्चिम से संपर्क और भारतीय पुनर्जागरण के कारण भारतीयों को यह महसूस करना पड़ा कि पश्चिम की अनुपम भौतिक प्रगति और वैभव का श्रेय उनके वैज्ञानिक विकास तथा उनके द्वारा की गई वैज्ञानिक खोजों और अविष्कारों को है। सर जगदीश चंद्र बोस ने 1897 ई. पादप-जीवन ''पर खोज की और अपनी 'सूक्ष्म-तरंग (शर्टबेव वायरलेस)के प्रयोग से संपूर्ण विश्व को चकित कर दिया। सन् 1902में प्रफुल्ल चंद्र राय ने भारतीय रसायन का इतिहास लिखा जिससे पाश्चात्य देश रसायन-शास्त्र के क्षेत्र में हमारी प्रगति से परिचित हुए। भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र आदि क्षेत्रों में शोधों के लिए टाटा ने भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इनस्टीट्यूट ऑफ साइंस)की स्थापना बैंगलोर में की। 1914 ई. में विज्ञान के अध्ययन और शोध की प्रगति, विज्ञान की प्रगति से लोगों को परिचित कराने, विज्ञान के प्रति अभिरुचि जाग्रत करने, और वैज्ञानिकों में परस्पर निकट संपर्क बढाने के लक्ष्य से,

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

'भारतीय विज्ञान कांग्रेस' प्रारंभ की गई। यह विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है और अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। 1918 में श्री निदास रामनुजम ने गणित में अपने नैपुण्य से विश्व को चकित कर दिया था। वनस्पति शास्त्र के क्षेत्र में सर जगदीश चंद्र बोस, 1930 में भौतिक शास्त्र के क्षेत्र में श्री सी वी रमन आदि ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति और नाम प्राप्त किए हैं। 1930 का नोबेल पुरस्कार भी सी वी रमन को उनकी खोजों की अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता के कारण ही प्राप्त हुआ। भौतिक शास्त्र के अध्ययन को बढ़ावा देने के लक्ष्य से उन्होंने बेंगलूर में 'रमन विज्ञान संस्थान' स्थापित किया। विज्ञान की प्रगति के लिए इलाहाबाद में, जून 1930 में 'राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी'' की स्थापना की गई। इन संस्थाओं तथा इनके शोधकर्ताओं के परिणामस्वरूप विज्ञान ने प्रसिद्धि प्राप्त की। कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में इसे अध्ययन का एक विषय बनाया गया।

राजनीतिक स्वतंत्रता के वाद भारत सरकार ने बैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए एक अलग विभाग खोला है तथा इसके लिए एक सलाहकार समिति बनाई है। धीरे-धीरे वैज्ञानिक खोजों और अविष्कारों में अभिरुचि बढ़ी है तथा जन-समुदाय और सरकार दोनों इन दिशा में तेजी से आगे बढ़े हैं। फलत: बड़ी संख्या में तकनीकी एवं वैज्ञानिक संस्थाएँ स्थापित की गई। इनमें से ''नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी'', दिल्ली, ''नेशनल कैमीकल लेबोरेटरी'' पूना, ''नेशनल मैटोलर्जिकल लेबोरेटरी'' जमशेदपुर, झरिया में ईंधन शोध संस्थान (फ्यूअल रिसर्च इंस्टीट्यूट) एवं झरिया कोलफील्डस, कलकत्ता में ''सेंट्रल ग्लास एंड सैरोमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट,'' 'इंस्टीट्यूट ऑफ रेडिया फिजिक्स एंड इलैक्ट्रोनिक्स' आदि सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाएँ हैं। इनके अतिरिक्त 1916 में स्थापित ''जियोलोजीकल सर्वे ऑफ इंडिया'' तथा ''बॉटेनी कल सर्वे ऑफ इंडिया'' भी अपने-अपने क्षेत्रों में प्रशसनीय कार्य कर रही हैं। इन सभी संस्थाओं ने वैज्ञानिक तैयार किए हैं और विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में बहुमूल्य योगदान आज भी दे रही हैं।

हमारे देश में ख्यातिप्राप्त डॉ. राजा रमन्ना जैसे महान नाभिकीय वैज्ञानिक भी हैं जो नाभिक विज्ञान के जनक माने जाते हैं। अंतरिक्ष विज्ञानी डॉ. ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम और कल्पना चावला ने भी अपने क्षेत्रों में अद्‌भुत प्रशंसनीय योगदान दिए हैं। महामहिम डॉ. एी0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम को अपने देश के राष्ट्रपति के रूप में पाकर हमें गर्व है जबकि अंतरिक्ष की प्रथम भारतीय महिला वैज्ञानिक स्वर्गीय कल्पना चावला के न रहने से शोकग्रस्त हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

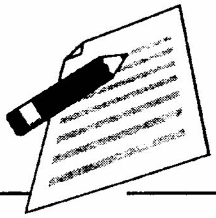

पाठगत प्रश्न 33.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो

(अ) .... प्राचीन भारत सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे।

(ब) .... 'आर्यभट्टीय' और 'सूर्य-सिद्धांत' जैसे दो वैज्ञानिक कृतियों के लेखक थे।

(स) ....ने भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

(द) इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलूर की स्थापना ....के द्वारा की गई।

आपने क्या सीखा

- भारत की सांस्कृतिक विरासत बड़ी समृद्ध है।
- इस पाठ के दूसरे भाग में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं-साहित्य, वास्तु कला मूर्ति या शिल्पकला एवं चित्रकला और संगीत एवं नृत्य के साथ ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी का वर्णन है ताकि भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अधिक अच्छे तरीके से समझा जा सके।
- भारतीय संस्कृति में विविध घटक, जैसे आर्यों, द्रविड़ों, पारसियाँ, यूनानियाँ, चीनियों, मुसलमानों तथा विभिन्न दूसरी संस्कृतियों के स्वरूप घुलमिल गए हैं जिससे यह संस्कृति अधिक विस्तृत और समान्वित हो गई है।
- आज हमें ऐसी मानवतावादी संस्कृति की आवश्यकता है जो भारत की प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृतियों को न केवल मिलाकर रखे अपितु उसमें पूरब और पश्चिम दोनों का संश्लेषण हो। भारत एक मात्र देश है जहाँ पूर्व और पश्चिम प्रसन्नता पूर्वक संबंध बनाए रख सकते हैं और आसानी से घुलमिल सकते हैं।
- हमें एक ऐसे नवीन मेल-मिलाप (संश्लेषण) की आवश्यकता है जिसमें हमारी भूमि की प्राचीन संस्कृति पुनर्गठित और समृद्ध हो सके।
- एक सम्पन्न विरासत से बढ़कर अन्य कुछ भी अधिक लाभदायक और अधिक प्रशंसनीय नहीं है। पर मात्र उसी विरासत पर आश्रित रहने से बढ़कर खतरनाक वस्तु भी एक राष्ट्र के लिए और कुछ नहीं है।
- एक राष्ट्र अपने पूर्वजों का अनुकरण मात्र करके कभी भी तरक्की नहीं कर सकता है। जिससे एक राष्ट्र निर्मित होता है- वह है उसकी क्रियात्मकता, अविष्कार के स्वरूप तथा व्यापक क्रिया-कलाप।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठान्त प्रश्न्

(1) भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अर्थ संक्षेप में लिखिए।

(2) भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए हमारी संस्कृति के दो पहलुओं की विवेचना कीजिए।

(3) संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(अ) आदर्श प्रतिमान एवं जीवन-मूल्य।

(ब) कला एवं चित्रकला।

(4) भारतीय वैज्ञानिकों का योगदान संक्षेप में लिखिए।

शब्द—कोष

(अ) वास्तु-कला- भवनों के मानचित्र बनाने और भवन-निर्माण की कला और विज्ञान मूर्तिकला या शिल्पकला

(ब) शिल्पकला- वह कला या अभ्यास जो लकड़ी, संगमरमर या मिट्टी के ऊपर खुदाई द्वारा चित्र या मूर्तियां बनाना सिखाए।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

(स) विरासत; पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त या अर्जित कोई वस्तु।

(द) आदर्श प्रतिमान; एक विशिष्ट जन-समुदाय के लिए खास तरीकें या स्तर की आदर्श बातें।

(इ) खगोल शास्त्र; पृथ्वी से ऊपर विश्व या जगत का वैज्ञानिक-अध्ययन।

(ई) लिखित (ट्रीटाइज)दस्तावेज; किसी विषय का व्यवस्थित रूप से लिखित औपचारिक विवरण।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

33.1 (1) अदारंग और सदारंग.................. बीणा

(2) रघुनाथ पाणिग्रही और संजुक्ता पाणिग्रही................... ओडिसी

(3) रुकमिनी देवी .... भरतनाट्यम्

(4) मैडम सिमकी .... कथकली

33.2 (अ) कोणार्क (ब) कलकत्ता (स) जयपुर (द) आगरा

33.3 (अ) बौद्धायन (ब) आर्यभट्ट (स) सी0 वी0 रमन (द) टाटा।

34

सांस्कृतिक अनेकता

हम, पहले, संस्कृति का अर्थ, धारणा और विशेषताओं के बारे में पढ़ चुके हैं। हम भारतीय संस्कृति के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक पहलुओं से भी परिचित हो चुके हैं। इस पाठ में, हम सांस्कृतिक अनेकता का अर्थ, सांस्कृतिक सम्बद्धता और सांस्कृतिक पिछड़ेपन के साथ ही सांस्कृतिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी परिवर्तनों और कारणों को समझेंगे।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- सांस्कृतिक अनेकता का अर्थ बता सकेंगे;
- सांस्कृतिक सम्बद्धता की व्याख्या कर सकेंगे; और
- सांस्कृतिक पिछड़ेपन और सांस्कृतिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी परिवर्तनों और कारणों को समझा सकेंगे।

34.1 सांस्कृतिक अनेकता का अर्थ

सांस्कृतिक अनेकता की चर्चा करते हुए हमें पहले, 'अनेकता' – शब्द – का अर्थ समझ लेना चाहिए जिसका अर्थ होता है 'बहुलता' या 'बहुत से'। सांस्कृतिक अनेकता उस समय उत्पन्न होती है जब दो या दो से अधिक सांस्कृतिक समूह एक ही भौगोलिक क्षेत्र में व्याप्त होते हैं, और कुछ सामान्य या एक जैसी क्रिया या

क्रिया-कलापों में सम्मिलित होते हैं, परस्पर सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान करते हैं, पर अपनी सांस्कृतिक सत्ताओं को बनाए रखते हैं। यह, अनेक असमान वस्तुओं अथवा कार्य-कलापों की पद्धतियों का एक सह-अस्तित्व होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सांस्कृतिक अनेकता एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक समूह साथ-साथ होते हैं और एक समान या एक ही मंच पर अपनी अलग-अलग पहचानों के साथ एकजुट बने रहते हैं। सांस्कृतिक अनेकता के कुछ पहलुओं को हम तभी समझ पाएँगे जब हम अपने समग्र देश पर विचार करें। हमारा देश 28 प्रांतों और सात संघ शासित क्षेत्रों में विभाजित है। यह उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पश्चिम में गुजरात प्रांत के कच्छ से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रांत के कामरूप तक फैला हुआ है। हम लोग अनेक भाषाएँ बोलते हैं। हमारी वेषभूषाएँ अलग-अलग हैं। पर इन विभिन्नताओं के होते हुए भी हमारे राष्ट्रीय भाव समान हैं, हमारी राजनैतिक विचारधारा एक है, और हम सब समान देवी देवताओं के उपासक हैं। हम समान तीर्थ-स्थानों की यात्रा करते हैं और अपनी विरासत की समान धारा का सम्मान करते हैं। इस प्रकार, हम ऊपर से विविधतापूर्ण दिखने वाली स्थितियों में, एक ही समन्वित समग्र संस्कृति की रूपरेखा के भीतर निवास करते हैं जिसे 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' नामक अपनी पुस्तक में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने "अनेकता (विविधता) में एकता" की संज्ञा दी है। भारत में, प्राचीन परंपरा के साथ ही वर्तमान परिस्थितियाँ भी एक अपूर्व राष्ट्रीय स्वरूप के विकास के अनुकूल हैं। फिर भी, इसी के साथ विभिन्न समुदायों को अपनी संस्कृति और धार्मिक रीति-रिवाजों को बनाए रखने एवं विकसित करने की स्वतंत्रता उस सीमा तक सुनिश्चित है जब तक कि वह राष्ट्र की एकता और सामान्य कल्याण के लिए हानिकारक नहीं है। यही सांस्कृतिक अनेकता है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

Notes

पाठगत प्रश्न 34.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(अ) अनेकता का अर्थ .... होता है।

(ब) सांस्कृतिक अनेकता का उत्तम उदाहरण .... है।

(स) पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में सांस्कृतिक अनेकता को .... कहा गया है।

(द) भारत .... प्रांतों और .... संघ शासित क्षेत्रों में विभाजित है।

34.2 सांस्कृतिक सापेक्षतावाद

सभी लोग जीवन-पद्धतियों के विषय में अपने से अलग कुछ राय बनाते हैं। जब विधिवत अध्ययन किया जाता है तो तुलना करने के लिए वर्गीकरण का प्रश्न पहले आता है और अनेक विद्वानों ने मानव जीवन को वर्गीकृत करने की भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ निर्धारित की हैं। पर संस्कृतियों का मूल्यांकन या परख इस तथ्य को आधार बनाकर हो सकती है कि वह किस क्षेत्र से निकली हुई हैं? अपनी राय निर्धारित करने के अन्य अनेक मानदंडों पर असहमति भी हो सकती है। इसलिए एक परिभाषा पर आधारित निर्णय दूसरी धारणाओं के तथ्यों के अनुरूप या समान नहीं होंगे। जब कभी हम संस्कृतियों का अध्ययन करते हैं या एक संस्कृति की दूसरी से तुलना करते हैं तो हमें उन संस्कृतियों का मूल्यांकन उनके द्वारा अपने समूहों को बनाये रखने की क्षमता और उनके सांस्कृतिक संदर्भों में उनके द्वारा आवश्यक भूमिका या कर्त्तव्य-निर्वाह को ध्यान में रखकर किया जा सकता है। अन्यथा, वे समाज, जहाँ वह संस्कृति विद्यमान है, जीवित नहीं रह पायेंगे। सांस्कृतिक सापेक्षता के अध्ययन करने से पहले हमें शब्द ''वैचारिक केन्द्रिकता'' अथवा ''ईथनोसेंट्रिज्म'' को समझ लेना लाजमी है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

सभी मानव समूहों में रहते हैं। प्रत्येक समूह की अपनी अलग जीवन-शैली होती है जिसे हम संस्कृति कहते हैं। समूह के लोग-सतत अपने प्रयत्नों से गलती कर करके सीखते हुए कुछ विश्वासों, जीवन पद्धतियों तथा लोक रीतियों का विकास करते हैं। अत: प्रत्येक संस्कृति निजी अनुभवों और परिवेश के संदर्भ में कार्य करती है। परिणामत: प्रत्येक व्यक्ति किसी दूसरे की अपेक्षा अपनी संस्कृति को अधिक अच्छी तरह जान और परख सकता है तथा अपनी संस्कृति के मानदंडों के माध्यम से दूसरी

संस्कृतियों की जांच करने का प्रयत्न करता है। अपनी संस्कृति के पैमाने से दूसरों की संस्कृतियों को जांचने की इस प्रवृत्ति को मोटे तौर पर, ''वैचारिक केन्द्रिकता'' या ''ईथनोसेट्रिज्म'' कहते हैं। दूसरों की जीवन-शैलियों को स्वयं की जीवन शैली की अपेक्षा परोक्ष और अपरोक्ष रीति से, छोटी या हीन समझने की चिरस्थायी हुई प्रवृत्ति या भावना ही ''वैचारिक केन्द्रिकता'' या ''ईथनोसेंट्रिज्म'' कहलाती है। उदाहरणत: जिन संस्कृतियों में अपनी चचेरी/ममेरी बहिन से शादी करने की प्रथा है, उन्हें, जिनमें चचेरी/ममेरी बहिन को बहिन ही माना जाता है, उन लोगों द्वारा छोटा या हीन समझा जाता है तथा दूसरी ओर इसके उलट दृष्टि भी हो सकती है।

विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन तथा दूसरी संस्कृतियों का वर्णन और तुलना करते हुए हमें निष्पक्ष रहना चाहिए और किसी संस्कृति की अच्छाई या बुराईयों अथवा एक से दूसरी के हीन या अच्छी होन का निर्णय नहीं करना चाहिए। सांस्कृतिक सापेक्षतावाद एक ऐसी नैतिक पद्धति है जिसमें सभी संस्कृतियाँ समान समझी जाती हैं। प्रत्येक के अलग इकाई होने तथा उसकी अपनी अखंडता होने से जाँचकर्त्ता को अपनी संस्कृति के मानदंडों से मापकर किसी संस्कृति की तुलना नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक संस्कृति का इतिहास अलग होता है। यह इसलिए होता है कि प्रत्येक का विकास अपनी-अपनी रीति से हुआ है। और यही कारण है कि दूसरे भिन्न इतिहास वाली संस्कृति से उसकी माप या तुलना नहीं की जा सकती। प्रत्येक संस्कृति समय के अनुसार, कोई अधिक और कोई कम, कुछ क्षेत्रों और उन दबावों के अनुकूल बदलती रहती है जो दूसरी पर नहीं पड़े या दूसरी ने नहीं झेले। क्योंकि प्रत्येक संस्कृति का अपना अलग इतिहास होता है, अत: संस्कृति उस अच्छाई या उत्तमता के पैमाने से नहीं मापी जा सकती जिसका एक समूह विशेष के मानकों के अनुसार अलग-अलग श्रेणियों में निर्धारण किया गया हो। अन्य संस्कृतियों के अध्ययन के पूरे दौर में हमें यथासंभव 'वैचारिक केन्द्रिकता' या 'ईथनोसेंट्रिज्म' पर नियंत्रण करने का प्रयास करना चाहिए (अर्थात् एक विशेष संस्कृति से तुलना नहीं करनी चाहिए)। सांस्कृतिक विभिन्नताओं के विषय में हमें अधिक वस्तुनिष्ठ तथा दूसरे लोगों के विषय में अधिक सहिष्णु होने का प्रयास करना चाहिए। यह दृष्टिकोण या अभिवृत्ति सांस्कृतिक सापेक्षतावाद नाम से जानी जाती है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

बहु विवाह (प्रथा)

- बहुपत्नी प्रथा (पॉलीजिनी)
- बहुपति प्रथा (पॉलीएंड्री)

यह इस विचार पर आधारित है कि सभी जीवन-मूल्य संबंधगत हैं और ऐसे कोई मानदंड परिपूर्ण नहीं हैं जो कि सभी सांस्कृतिक स्थापनाओं पर लागू होते हों। उदाहरण

के लिए मुसलमान लोग बहुपत्नी प्रथा के हिमायती हैं जो कि बहुत से हिंदू समुदायों में प्रतिबंधित है। पूर्वोत्तर भारत में 'खासी' समुदाय मातृप्रधान है जबकि 'नागा' लोग पितृप्रधान। दक्षिण भारत में अनेक समुदाय चचेरी या ममेरी बहिन से शादी करना पसंद करते हैं जबकि पूर्वी भारत में चचेरी या ममेरी बहिन, बहिन के समान मानी जाती है। ये रीतियाँ उनके घटित होते जीवन-मूल्यों के रूप में स्वीकृत हैं। दूसरे शब्दों में, पूर्वी भारत में चचेरी/ममेरी बहिन को बहिन ही माने जाने विषयक प्रचलित रीति, दक्षिण भारत की रीति को न्यायसंगत नहीं ठहराती। अत: एक रीति विशेष का संबंध संस्कृति-विशेष से ही होता है। 'सांस्कृतिक सापेक्षतावाद' से हमारा यही आशय है।

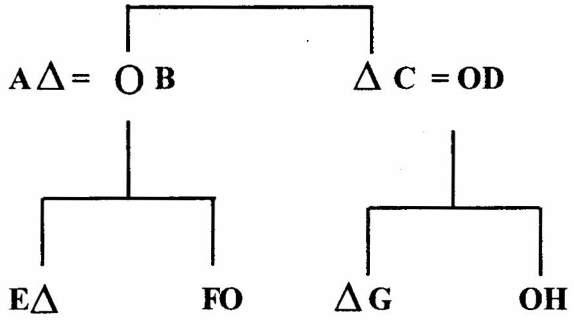

"चचेरी/ममेरी बहिन से शादी का चार्ट"

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

'ए'-'बी' का पति है।

'सी'-'डी' का पति है।

'बी'-'सी' की बहिन है।

'ई' और 'एफ' - 'ए' और 'बी' के बच्चे हैं।

'जी' और 'एच' -'सी' के बच्चे हैं।

'ई' और 'एफ' - 'जी' और 'एच' के और 'डी' "क्रास-कजिन" अर्थात चचेरे/ममेरे भाई-बहनों के बच्चे हैं।

सांस्कृतिक सपेक्षतावाद के विषय में सर्वाधिक परिणामप्रद चर्चा का क्षेत्र जीवन-मूल्यों और नैतिकता का है। हम अपनी संस्कृति के दूसरे पहलुओं की अपेक्षा अपने नैतिक व्यवहार के बारे में कहीं ज्यादा बचाव की मुद्रा में होते हैं, क्योंकि, यह बात हम में छुटपन से ही बड़ी दृढ़ता से कूटकूट कर गहरी भरी होता है। हमारे नैतिक आदर्श और जीवन-मूल्य भी हमारे उस सांस्कृतिक और भौतिक परिवेश पर आधारित होते हैं जिसमें कि हम पैदा हुए हैं और जिससे अलग होना संभव नहीं है। सांस्कृतिक सापेक्षतावाद के संदर्भ में "निर्णय अनुभव पर आधारित होते हैं और अनुभव हर व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं के संस्कारीकरण की स्थितियों या संदर्भ में ही जाने-समझे जाते हैं। संस्कृति के सभी स्तरों या रूपों के लिए यह सत्य साबित होता है। मूल्यांकन उस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप किये जाते हैं जिसमें से वे उदित होते हैं।

Notes

पाठगत प्रश्न 34.2

एक वाक्य में उत्तर दीजिए: निम्नांकित से आप क्या समझते हैं:

(अ) 'वैचारिक केन्द्रिकता' (ईथनोसेंट्रिस्म)

(ब) 'एक-विवाह-पद्धति' (मोनोगैमी)

(स) विलिंग सहोदर विवाह (क्रास कजिन मैरिज)

34.3 सांस्कृतिक विलम्बना

'सांस्कृतिक विलम्बना' शब्द का मतलब वह स्थिति है जब समाज की प्रोद्योगिकी में आये परिवर्तनों से किसी सामाजिक जीवन के नियामक विचार, जीवन-मूल्य और आदर्श तथा विश्वास तालमेल न रखकर पिछड़ रहे हों। उदाहरण के लिए, अंतरराष्ट्रीय आदर्श-प्रणाली और प्रयोग, प्रचलन तथा नियंत्रण के न होने से अनेक राष्ट्रों द्वारा नाभिकीय हथियारों का विकास और निर्माण कर लेना। इस मामले में, यह तय है कि प्रोद्योगिकी में परिवर्तन तो हो गया पर उसके उपयोग का विकास होना अभी शेष है। कहना यह है कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों की तुलना में नैतिक मूल्यों में होने वाला परिवर्तन सदा पिछड़ता रहता है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

इस समय, मानव क्लोनिंग (मानव शरीर के जीवाष्मों की सहायता से उत्पत्ति) द्वारा एक मानव की बिना प्राकृतिक प्रणाली के, प्रजनन तंत्र के बाहर-बाहर रचना किए जाने के नैतिक प्रश्न पर बहुत बड़ी बहस जारी है। एक मानव, अपनी संस्कृति जिसका कि वह एक भाग है, के द्वारा निर्धारित संबंधों की अन्तर्रचना में अपने समूह में, एक-दूसरे व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से जुड़ा हुआ होता है। एक क्लोन पद्धति से पैदा हुआ बच्चा या मानव इस सांस्कृतिक रूप से निर्दिष्ट प्रणाली में अथवा सामाजिक संबंध रचना में किस तरह फिट हो सकेगा या अपना अस्तित्व बना सकेगा, इस बात पर अभी विचार किया जाना है। यह सांस्कृतिक विलम्बना का बड़ा स्पष्ट सा मामला है जहाँ चिकित्सा-प्रौद्योगिकी ने सामाजिक क्षेत्र को अपनी रेखा से बाहर कर दिया या पिछाड़ दिया है।

पाठगत प्रश्न 34.3

ठीक उत्तर के लिए 'सत्य' और गलत के लिए 'असत्य' शब्द लिखिए:

(अ) जब सामाजिक जीवन के नियामक नैतिक मूल्य, प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में आये परिवर्तनों के साथ नहीं चल पाते तो उसे सांस्कृतिक विलम्बन कहते हैं।

(ब) न्यूक्लीयर हथियारों के प्रयोग के नियमन के लिए कुछ स्वीकृत अंतरराष्ट्रीय आदर्श हैं।

आपने क्या सीखा

- सांस्कृतिक अनेकता का जहाँ तक संबंध है, हम समझते हैं कि यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक समूह अपने संबंधित एकाधिकार और पहचान को उस सीमा तक बिना खोये हुए बने रह सकते हैं या परस्पर सक्रिय रह सकते हैं जब तक कि वे राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के सामान्य कल्याण के लिए बाधक या हानिकारक न हों।
- हमें ''वैचारिक केन्द्रिकता'' (ईथनासेंट्रिइस्म) का यह अर्थ समझ में आया है कि वह दूसरे व्यक्ति की कार्य-पद्धति को छोटा या हीन समझने की एक प्रवृत्ति है।
- सांस्कृतिक सापेक्षता (कल्चरल रिलेटिविज्म) एक ऐसी नैतिक स्थिति है जिसके अनुसार सभी संस्कृतियाँ अपनी अखंडता में एक अलग इकाई होते हुए, समान मानी जाती है। अन्य संस्कृतियों के स्तरों के समान उनके होने या न होने विषयक मापदंडों की तुलना नहीं की जानी चाहिए।
- इस पाठ में हमने यह भी सीखा है कि समाज में विभिन्न परिवर्तनों के कारण सांस्कृतिक विलम्बना कैसे आ जाता है।
- इस भांति हम कह सकते हैं कि भारत जो ''विविधता में एकता'' की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है, एक अनेकतापूर्ण समाज का सच्चा उदाहरण है।
- हमारे समाज बहुत से सांस्कृतिक पिछड़ेपन के स्वरूप हैं। घटित परिवर्तनों के कारण हमें एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति से श्रेष्ठ या हीन होने जैसे स्वरूपों में तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक संस्कृति का विकास अनुपम होता है- और हर संस्कृति का अपना एक इतिहास होता है।
- दूसरे शब्दों में, संस्कृति प्रगतिशील होती है और अपने ढाँचे में वह अपने विकल्प की विपुल संभावनाएँ रखती है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठान्त प्रश्न

(1) 'सांस्कृतिक अनेकता' से आप क्या समझते हैं? एक उपयुक्त उदाहरण दीजिए।

(2) ''वैचारिक केन्द्रिकता'' (ईथनोसेंट्रिइस्म) किसे कहते हैं और यह 'सांस्कृतिक संबद्धता' से किस तरह भिन्न है? सोदाहरण विवेचन करो।

Notes

(3) सांस्कृतिक सापेक्षता (कल्चरल रिजेटिविज्म) की अपने शब्दों में व्याख्या करो।

(4) 'सांस्कृतिक विलम्बना' की उदाहरण सहित विवेचना करो।

शब्द कोष

(1) ''विलिंग सहोदर''- (क्रोस कजिन) वे बच्चे जिनके माँ-बाप किसी रूप से परस्पर भाई-बहिन होते हैं वे क्रॉस-कजिन होते हैं।

(2) सलिंग सहोदर (पैरलल कजिन)- वे बच्चे जिनके माता-पिता या तो भाई-भाई अथवा बहिनें-बहिनें होती हैं।

(3) एक-विवाह प्रथा (मोनोगैमी)- एक (मोनो) का अर्थ अकेला होता है। विवाह (गैमस) का अर्थ शादी। इस प्रकार 'एक विवाह प्रथा' (मोनोगैमी) का अर्थ हुआ वह शादी (विवाह) जिसमें एक व्यक्ति की एक समय एक ही पत्नी होना। (एक ही स्त्री से एक पुरुष का विवाह होना)।

(4) बहुविवाह प्रथा (पॉलीगैमी) - बहु (पॉली) का अर्थ एक से अधिक। जब एक पुरुष का एक से अधिक स्त्रियों से विवाह हुआ हो वह 'बहुपत्नी प्रथा' (पौलीगिनी) कहलाती है और जब एक औरत एक से अधिक पुरुषों से शादी कर लेती है तो वह 'बहुपति प्रथा' (पौलिएँड्री) होती है। इस रीति के मिले-जुले रूप को 'बहु-विवाह' प्रथा (पॉलीगैमी) कहते हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

(5) पैतृक (पैट्रीनियल)- 'पितृ' (पैट्री) का अर्थ है पिता। जब परिवार का क्रम पिता से पुत्र, फिर बेटे से पोते और इसी तरह हो तो पैतृक (पैट्रीनियल) जाना जाता है।

(6) मातृक (मैट्रीनियल) - 'मातृ' का अर्थ है माता। जब परिवार का क्रम माँ के क्रम में हो जैसे माँ से बेटी और बेटी से दोहित्री और दोहित्री से उसी तरह आगे हो तो वह 'मातृक' जाना जाता है।

(7) क्लोनिंग - एक लैंगिक प्रजनन के माध्यम से एक जीवाष्म या व्यक्ति का आनुवंशिक प्रतिरूप निर्मित करने को 'क्लोनिंग' कहते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

34.1

(अ) अनेक (बहुत से)

(ब) भारत

(स) 'विविधता में एकता'

(द) 28 राज्य (प्रांत) और 7 संघ शासित क्षेत्र

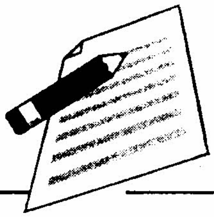

Notes

34.2

(अ) ''वैचारिक केन्द्रिकता'' (ईथनोसेंट्रिइस्म) एक वह प्रवृत्ति है जिससे व्यक्ति अपने मापदंड से दूसरों की संस्कृति को परखता या उसका निष्कर्ष निकालने लगता है।

(ब) 'सांस्कृतिक सापेक्षतावाद' (कल्चरल रिलेटिविज्म) वह नैतिक अवस्था या स्थिति है जिसमें सभी संस्कृतियाँ, एक अलग इकाई होती हुई अपनी अखंडता के कारण बराबर समझी जाती है।

(स) 'क्रॉस कजिन' और 'पैरलल कजिन' के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

34.3

(अ) सत्य

(ब) असत्य

(स) सत्य

(द) सत्य

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

35

संस्कृति पर संचार माध्यमों का प्रभाव

दूर-दराज बसे हुए संबंधियों और मित्रों के पास हमेशा आना-जाना संभव नहीं होता। हमें उन्हें संदेश भेजना और उनसे संदेश या सूचनाएँ प्राप्त करना आवश्यक होता है। सुदूर स्थानों में रहने वाले लोगों को लिखित या मौखिक संदेश भेजने के लिए संचार के विभिन्न माध्यम जैसे पत्र, तार (टेलीग्राम) तथा टेलीफोन हमारे काम आते हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

हम सभी दूरदर्शन (टी. वी.) देखते हैं, अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं, और हम फिल्में देखने भी जाते हैं। हमारे साथी लोगों के पास ये विभिन्न संचार के साधन मौजूद हैं। भोजन और आवास की भौतिक आवश्यकताओं के अलावा अब मुनष्य की एक दूसरी मूलभूत आवश्यकता अपनी सूचना देने अथवा बात कहने की है। अपनी बात कहने या संदेश-आदान-प्रदान की उत्कंठा एक प्राथमिक आवश्यकता है और समकालीन सभ्यता के अनुसार जीवित रहने के लिए यह एक बड़ी आवश्यकता हो गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- संचार माध्यम की परिभाषा बता सकेंगे, (स्पष्ट कर सकेंगे)
- संचार माध्यम के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- संस्कृति के विस्तार (फैलाव) में संचार माध्यमों की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे; और
- भारतीय समाज और संस्कृति पर संचार माध्यमों, विशेषरूप से दूरदर्शन, के प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

35.1 जन–संचार–माध्यमों का अर्थ और परिभाषा

एक स्थान या व्यक्ति से दूसरे स्थान या व्यक्ति तक सूचनाओं, विचारों और दृष्टिकोणों (अभिवृत्तियों) को आदान-प्रदान करने की कला संचार कहलाता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को, अपनी एक अथवा अधिक इन्द्रियों–दृश्य, वाणी (आवाज), स्पर्श, रस (स्वाद), बोलने अथवा गंध (सूंघकर) के द्वारा कोई संदेश भेजता है। जब हम हंसते हैं तो हम मित्रता की इच्छा की सूचना देते हैं; वह लहजा जिसमें हम ''नमस्कार'' (गुड मार्निंग) कहते हैं, शत्रुता से लेकर गहरी प्रसन्नता तक की हमारी सभी मनोदशाओं को दर्शा सकता है। हम बोलते अथवा लिखते समय जिन शब्दों का चुनाव करते हैं वे हमारे द्वारा अन्य व्यक्ति को दिए गए संदेश को प्रकट या व्यक्त करते हैं। जितने अधिक प्रभावशाली तरीके से हम उन शब्दों का चुनाव करते और व्यक्त करते हैं, उतनी ही अच्छी हमारी उस व्यक्ति के साथ वार्तालाप भी होती है।

समकालीन समाज में एक व्यक्ति से दूसरे के बीच केवल सीधे वार्तालाप के जरिए कार्य संपादन करना बहुत ज्यादा जटिल हो गया है। हमारे महत्वपूर्ण संदेशों के प्रभावशील होने के लिए उनका एक ही समय में बहुत सारे लोगों तक पहुँच जाना जरूरी है। उदाहरण के लिए, बिजली के बार-बार गुल हो जाने से नाराज एक गृहिणी अपने आस-पड़ोस के आधे दर्जन लोगों से ही संगठित होकर 'बायकाट' करने की बात कह सकेगी, पर उसका लिखा हुआ पत्र एक स्थानीय समाचार पत्र के संपादक द्वारा छापे जाने पर बहुत कम समय में सैकड़ों महिलाओं को उसके विचारों से अवगत कराएगा। हम एक अन्य उदाहरण लें, एक राजनेता जो चुनाव लड़ रहा है, यदि वह वोट प्राप्त करने की आशा में व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलकर जनसभाएँ तथा बैठक करता है तो वह अपने चुनाव अभियान में ढेर सारा समय लगायेगा। किन्तु दूरदर्शन या रेडियो को कुछ समय के लिए किराए पर लेकर तथा समाचार पत्रों में स्थान हेतु पैसा खर्च करके वह एक ही साथ हजारों मतदाताओं को अपना संदेश पहुँचा सकता है। जनसंचार एक ऐसा माध्यम है जो इसी लक्ष्य से विकसित हुआ है कि इनसे भिन्न-भिन्न स्थानों तथा समुदाय के विविध प्रकार के श्रोताओं को कम से कम समय में एक साथ ढेर सारी सूचनाएँ, विचार और दृष्टिकोण पहुँचाए जा सकते हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

संचार प्रणाली- प्रेषक (सी) चुने हुए चैनल के माध्यम से श्रोताओं तक संदेश भेजने का स्थान (ए)

आओ अब, हम, जन-संचार माध्यमों को समझ लें। जन-संचार माध्यम विविध प्रकार के श्रोताओं तक सूचना, विचार दृष्टिकोण आदि को कुछ जन-संचार माध्यम के उपकरणों के द्वारा भेजने का तकनीकी (प्रौद्योगिकी) साधन हैं। एक प्रकार से, शब्द और चित्र एक ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा विचार और भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं पर इस माध्यम का अर्थ केवल इतने तक ही सीमित नहीं है। माध्यम का अर्थ है दोनों के मध्य की कोई चीज जो बीच में आती हो। उदाहरणत: एक क्रेता और विक्रेता के बीच में पैसा अदला-बदली का साधन बनता है। शिल्पकार के भावों को व्यक्त करने हेतु पत्थर एक माध्यम है। विचारों और भावनाओं को भेजने या पहुँचाने का संचार-माध्यम ऐसी कोई भी वस्तु बन सकती है। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि सूचनाओं का भेजना या संचार करना एक ऐसा कार्य या प्रक्रिया है जिसमें सूचनाएँ, विचार, संवेग कौशल आदि, मौखिक या अ-मौखिक माध्यमों (शब्दों, चित्रों, रेखाचित्रों, ग्राफों, हाव भावों तथा अन्य प्रक्रियाओं (आदि) द्वारा भेजा जाना निहित है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

"जन संचार-माध्यम द्वारा एक क्षण में दिए गए संदेश या उदाहरण" स्त्रोत (एस) प्रेषक द्वारा भेजा गया संदेश (सी) संपादक द्वारा नियंत्रित चैनलों में (ई) कुछ श्रोता सदस्य (ए) कुछ सीधे, कुछ अपरोक्ष सुन रहे हैं, कुछ ध्यान नहीं दे रहे, संचार-मार्ग से कुछ प्रतिक्रियाएँ होना फीडबैक है।)

पाठगत प्रश्न 35.1

निम्नलिखित शब्दों से आप क्या समझते हैं? प्रत्येक के विषय में एक वाक्य में लिखिए:

(अ) जन-संचार (मास कम्यूनिकेशन)

(ब) अंतरावैयक्तिक संचार (इंट्रा परसनल कम्युनिकेशन)

(स) अन्तर व्यक्तिगत संचार। (इंटर परसनल कम्यूनिकेशन)

(द) जन-संचार-माध्यम। (मास मीडिया)

35.2 संचार माध्यम के प्रकार

जन-समुदाय में श्रोताओं को बहुत से साधनों से संदेश संचारित किया जा सकता है। कई जन-संचार-माध्यमों में से कम से कम एक की आवश्यकता बिना महसूस किये मुश्किल से ही कोई दिन गुजरता होगा। जन-संचार माध्यमों के विविध प्रकार निम्नांकित है,

1. सबसे प्राचीन माध्यम छपे हुए शब्दों और चित्रों का है जिनमें निहित संदेश दृष्टि की इंद्रिय से सुलभ होते हैं। ये समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पैम्फलेट, तथा खुले डाक-परिपत्र होते हैं। इन सभी को प्रकाशित (छपे हुए) माध्यम या 'प्रिट मीडिया' कहते हैं। समाचार-पत्रों में, समुदाय, राष्ट्र और कभी-कभी विश्व-समुदाय पर भी प्रकाश डाला जाता है। पत्रिकाओं में सूचनाओं की पृष्ठभूमि, मनोविनोद, स्पष्ट विचार और विज्ञापन-प्रकाशित होते हैं। पुस्तकों में विषयों के विस्तृत विवेचन और विस्तारपूर्वक परीक्षण के साथ-साथ मनोविनोद भी होता है। पैम्फलेटों और सीधे डाक-परिपत्रों में व्यापारिक और नागरिक संगठनों के विचार और दृष्टिकोण होते हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

2. ध्वनि के माध्यम से संचारित जन-संचार साधन रेडियो है। रेडियो द्वारा मनोरंजन, समाचार और विचार, चर्चाएँ, तथा विज्ञापन संदेश सुनने को मिलते हैं और वह श्रोता को घर बैठे जन-समुदाय में घटित होने वाली घटनाओं का सीधा संदेश दे देता है। यह एक इलैक्ट्रोनिक मीडिया (विद्युत-चुम्बकीय) संचार माध्यम है।

3. दूरदर्शन द्वारा प्रसारित गतिमय चित्र दृश्य और श्रव्य इंद्रियों को बहुत रोचक एवं आकर्षक लगते हैं। दूरदर्शन के प्रोग्राम शिक्षाप्रद, सूचनाप्रद, और प्रचुर मात्रा में मनोरंजन तथा विज्ञापन-संदेशों से भरपूर होते हैं। फिल्मों से सूचनाएँ मिलती हैं, उनसे मनोरंजन होता है तथा वे अपने अनुरूप सोचने-समझने के लिए प्रेरित करती हैं। दूरदर्शन भी विद्युत चुम्बकीय संचार-माध्यम (इलैक्ट्रोनिक मीडिया) है।

4. **संचार साधानों की कुछ महत्वपूर्ण ऐजन्सियाँ जो जन संचार माध्यमों से ही अनुबंधित या जुड़ी हुई हैं वे निम्नलिखित हैं-**

i. प्रेस संगठन समाचार एकत्रित करते हैं और समचार-पत्रों, दूरदर्शन चैनलों, रेडियो स्टेशनों तथा समाचार पत्रिकाओं को बांटते हैं।

ii. व्यावसायिक संगठन समाचारों की पृष्ठभूमि और तस्वीरें, टिप्पणियाँ तथा मनोरंजक सामग्री (फीचर्स) समाचार-पत्रों, दूरदर्शन, रेडियो और पत्रिकाओं को प्रदान करते हैं।

iii. विज्ञापन एजेंसियाँ एक ओर अपने व्यावसायिक ग्राहकों के विज्ञापन लेकर उनकी सेवा करते हैं तथा दूसरी ओर जन-संचार-माध्यमों को अपनी सेवा प्रदान करते हैं।

iv. कम्पनियों और संस्थाओं के विज्ञापन-विभाग एक व्यापारी की भूमिका अदा करते हैं तो जन-संपर्क विभाग छवि-निर्माण हेतु सूचनाओं के प्रसार या फैलाने का कार्य करते हैं।

v. जन-संपर्क- संदर्शन फर्में और जन-प्रचार संगठन अपने ग्राहकों की तरफ से सूचनाएँ प्रदान करते हैं।

vi. शोधकर्त्ता समूह संदेश के प्रभाव को संतुलित एवं उपयुक्त बनाने में सहयोग देते हैं और जनसंचार माध्यमों को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने हेतु अपने सुझाव देते हैं। जन-संचार माध्यमों का प्रमुख लक्ष्य (उद्देश्य) मात्र साधारण मनोरंजन नहीं है। जन-संचार- माध्यमों के दो प्रमुख कार्य हैं- समाचारों की रिपोर्टिंग करना और उन समाचारों पर आधारित उनकी व्याख्याएँ और विश्लेषण प्रस्तुत करना। जन-संचार-माध्यमों में समाचारों, विचारों और मनोरंजन के कार्यों का परस्पर निकटतम संबंध होता है और विविध संचार-माध्यम एक दूसरे पर पूर्ण रूप से, आश्रित होते हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठगत प्रश्न 35.2

कालम 'अ' तथा 'ब' का मिलान कीजिए-

'अ'	'ब'
(अ) रेडियो....................	श्रव्य-दृश्य
(ब) समाचार-पत्र............	श्रव्य
(स) फिल्म......................	प्रिंट मीडिया (छपा हुआ संचार (माध्यम)

35.3 संस्कृति के प्रसार (विस्तार) में जन-संचार माध्यमों का प्रभाव

उद्भव के स्थान से संपूर्ण क्षेत्र और आस-पड़ोस के क्षेत्रों अथवा पड़ोसी समुदायों में सांस्कृतिक भावना का फैल जाना ही प्रसार या विस्तार कहलाता है। हमने पहले पाठ में पढ़ा है कि संस्कृति में 'खान-पान, पहनावा (वेशभूषा), धार्मिक विश्वास, नृत्य और भाषा आदि सम्मिलित होते हैं।

गैसीय पेय (कोका कोला आदि), चाय, कॉफी, विभिन्न प्रकार की सिगरेटों, विभिन्न किस्मों के साबुनों, डिटर्जेंटों, सिर में लगाने वाले तेलों, शैम्पू, दांतों के पेस्ट, दांतों के ब्रुश तथा बालों को डाई करने की आदतों आदि का तीव्र प्रसार या फैलाव निश्चित रूप से, विगत समय में, दूरदर्शन के प्रभाव के कारण ही है। उदाहरणतः, दूरदर्शन पर दिखाए गए व्यावसायिक अंतरालों के समय के दृश्यों की चहल-पहल ने, निश्चित रूप से गैसीय पेयों के विविध प्रकारों (जैसे कोका कोला, पेप्सी, फ्रूटी आदि) का जीवन के लगभग हर क्षेत्र में भारी तादाद में उपयोग को बढ़ावा दिया है। जन-संचार माध्यमों द्वारा व्यापक प्रदर्शन के कारण, दक्षिण भारतीय नाश्ता माने जाने वाली 'इडली और डोसा,' अब लगभग, अन्तरराष्ट्रीय बन गए हैं। पंजाब और उत्तर-पश्चिमी भारत का एक सामान्य पहनावा- 'सलवार और कमीज' देश के हर स्थान में फैल चुका है। विगत शताब्दी के मध्य में, सिनेमा ने ''संतोषी मां'' की पूजा की रिवाज को फैलाने में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गत सदी के अंतिम दशकों में दूरदर्शन (छोटे परदे) ने जाति, धर्म, समुदाय, उम्र और लिंग के भेदों से परे लगभग हर व्यक्ति को 'रामायण' और 'महाभारत' के संदेशों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नृत्य की दो प्रकारों जैसे-'भरत नाट्यम' और 'ओडिसी' के उनके उद्भव के केन्द्रों से परे, प्रसारित करने या फैलाने में निश्चित रूप से पहले रेडियो, फिर सिनेमा और अंततः, पूर्णतः दूरदर्शन का प्रबल प्रभाव है। देश के विस्तृत भू-भाग में हिन्दी भाषा का प्रसार मुख्य रूप से हिन्दी सिनेमा के कारण हुआ है। यह विशेष रूप से 'विविध भारती'' और ''बिनाका'' जैसे कुछ विशिष्ट रेडियो प्रोग्रामों के माध्यम से रेडियो पर लगातार प्रसारित हिन्दी गीतों के कारण हुआ है। बाद में, दूरदर्शन ने भी सभी श्रेणियों के लोगों को, व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज हम देखते हैं कि हमारी दैनिक गतिविधियों में भी, हमारी मातृ भाषा के कुछ शब्द, दूरदर्शन पर दिखाए गए कुछ भाषिक प्रयोगों के अनुसार घुल-मिल गए हैं जैसे ''ब्रेक के बाद'' आदि। दूरदर्शन पर अपने माता-पिता के साथ व्यवहार करते हुए प्रदर्शित बच्चों की तरह हमारे बच्चें भी बर्ताव करते हैं। ये सभी जन-संचार-माध्यमों के व्यापक प्रभावों के फलस्वरूप सांस्कृतिक प्रसार या विस्तार के ही उदाहरण हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठगत प्रश्न 35.3

एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

(अ) सांस्कृतिक विस्तार क्या होता है?

(ब) संस्कृति के दो मदों के विषय में संक्षेप में लिखिए?

Notes

(स) दूरदर्शन के विज्ञापनों में जिन्हें आप ज्यादातर देखते हैं, किन्हीं दो गैसीय पेयों के ब्रांडों के नाम लिखिए?

(द) सिनेमा (फिल्म) और दूरदर्शन के माध्यम से फैलने वाली धार्मिक रीति का एक उदाहरण दीजिए?

35.4 दूरदर्शन का प्रभाव

एक नगरीय समुदाय में, जहाँ की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपनी भाषा की अपेक्षा अन्य भाषा में वार्तालाप करता है, वहाँ भाषा-रचना अपनाने में दूरदर्शन का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

दूरदर्शन जैसा एक दृश्य माध्यम, बोले या लिखे जाने वाले शब्दों की अपेक्षा सांस्कृतिक विचारों को सीखने या सिखाने के लिए, एक अधिक उपयोगी साधन समझा जाता है। फिर भी, दूरदर्शन का प्रभाव सदा सकारात्मक या पॉजीटिव ही नहीं होता। आओ, अब हम उन प्रभावों की चर्चा करें जिन्हें दूरदर्शन हमारे दैनिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करता है।

प्रात: काल जैसे ही हम जागते हैं हममें से अधिकांश एक प्याला चाय पीते हैं। यदि हम पीछे की ओर देखें कि हमें यह लत कैसे लग गई। संभवत: यह आदत प्राचीन चीन में खोजने से मिलेगी। कैसे भी हो, इस आदत ने जिस हद तक विश्व के लगभग हर भाग में फैल चुका है। इसके लिए दूरदर्शन के व्यावसायिक प्रदर्शनों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सकारात्मक पक्ष - दूरदर्शन के प्रोग्राभ बहुत ज्यादा ज्ञानप्रद एवं शिक्षाप्रद होते हैं बशर्ते कि हम यू.जी.सी. प्रोग्राम, क्विज प्रोग्राम, तथा सामूहिक परिचर्चाएँ देखें। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसा माध्यम है जिससे ज्ञान, सूचना तथा समझ प्राप्त की जा सकती है।

आजकल हमारे देश में हिंदी घर-घर की भाषा हो चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति की हिन्दी अपनी मातृभाषा न होते हुए अर्थात उड़िया, बंगाली या तेलगू होते हुए भी, हिंदी में बोलना प्रारंभ कर देता है। यह केवल लगातार दूरदर्शन देखने के कारण ही है। हम

Notes

दूसरों के साथ, स्वतंत्र रूप से, घुल-मिल सकते हैं, अपने विचारों और दृष्टिकोण का अपने निजी समूह के अतिरिक्त दूसरे लोगों से भी आदान-प्रदान कर सकते हैं। इस तरह, दूरदर्शन अपने परिवार, मित्रों तथा अन्य लोगों से संपर्कों को मजबूत बनाने या बढ़ाने के लिए एक आवश्यकता बन गया है।

यह जानना कि विश्व में और हमारे आसपास क्या हो रहा है दूरदर्शन हमारी बहुत बड़ी आवश्यकता को पूर्ति कर देता है। दूरदर्शन दक्षिण भारत से उत्तर भारत के विभिन्न समुदायों के पहनावे, लोगों के भोजन (खानपान) को दिखलाता है और देश के विभिन्न घरों के लोगों के पूजा-पाठ, और धार्मिक रीति-रिवाजों को भी प्रगट करता है।

दूरदर्शन सभी श्रेणियों के लोगों के मनोरंजन का साधन है। यह अकेले एवं एकाकी व्यक्ति, जैसे बूढ़ों तथा गृहिणियों के लिए साथी का काम करता है। घर पर रहने वाले परिवार के सदस्यों के लिए यह बातचीत के लिए अनेक विषय प्रदान करता है। कामकाजी लोगों का ध्यान जीवन की सामान्य एवं दैनिक समस्याओं से आसानी से हटाकर खिंचाव या तनाव मुक्त करता है। आज दूरदर्शन भारतीय परिवारों और विवाह की रीतियों तथा भारतीय संस्कृति पर भी नजर रखता है और परस्पर समझ-बूझ एवं सहनशीलता पर बल दे रहा है। भारत में परिवार एवं विवाह जैसी सामाजिक संस्थाओं ने इस विचार को सदा मजबूत बनाया है। संयुक्त परिवार प्रणाली ने इन जीवन-मूल्यों को पोषित किया है। दूरदर्शन के 'सीरियलों' में ऐसे आदर्श और जीवन-मूल्य दिखाए जाते हैं जिनसे हम उनके द्वारा अपने को जान पहचान सकते हैं और तुलना के रूप में उनका उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दूरदर्शन, आत्म-विश्वास, स्थिरता और पुनर्विश्वास की स्थापना के लिए एक आवश्यकता बन गया है।

नकारात्मक पक्ष - इन सब बातों के बावजूद, कुछ ऐसे क्षेत्र भी है जहाँ दूरदर्शन का प्रभाव सकारात्मक (अनुकूल) नहीं पड़ा है। यह पाया गया है कि कामुकता (इन्द्रियों की आसक्ति) के नग्न प्रदर्शन, आपराधिक प्रसंग, और समाज के असामाजिक तत्वों द्वारा दिखाई गई बर्बरता, दादागिरी, सामान्यत: युवकों पर एवं विशेष रूप से, बच्चों पर सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। फिल्मों, 'सिरियलों', विज्ञापनों और भेंट-वार्ताओ आदि, जो दूरदर्शन पर दिखाए जाते हैं, के दृश्य और विषय प्राय: हमारे उन जीवन-मूल्यों और आदर्शों की अवमानना करते हैं जिनके लिए हमारी परंपरागत राष्ट्रीय संस्कृति विख्यात है। पर, ये कामुक (इन्द्रियासक्ति के) नंगे प्रदर्शन, आपराधिकता, दादागीरी, मार-काट, भद्दे प्रदर्शनों तथा इसके अनेक अन्य नकारात्मक पहलुओं के द्वारा दर्शकों को लज्जित कर देते हैं।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

बच्चे बहुत ज्यादा समय से दूरदर्शन देख रहे हैं। इस प्रकार उनके समुचित पढ़ने-लिखने, सामाजिक मेल-जोल द्वारा (बनने) और दूसरी मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेने के अभाव के कारण उन पर नकारात्मक (प्रतिकूल) प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समाज में अपराध और हिंसा के बढ़ते हुए दौर में, दूरदर्शन के प्रोग्रामों और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संबंधों पर हुए अध्ययन से रोचक जानकारी प्राप्त हुई है। अधिक स्पष्ट रूप से, समझना प्रारंभ कर रहे हैं। भारत के तीन मैट्रोपॉलिटन महानगरों में दूरदर्शन के प्रोग्रामों पर हुए ताजा अध्ययन की रिपोर्ट के निम्नलिखित परिणाम मिले हैं-

इन महानगरों के 3500 बच्चों में से 79 प्रतिशत बच्चे शिक्षा विषयक प्रोग्रामों की अपेक्षा मनोरंजन के लिए कार्टून नेटवर्क देखना पसंद करते हैं। उनमें से 11 प्रतिशत 'राष्ट्रीय भूगोल चैनल' पसंद करते हैं, केवल आठ प्रतिशत पारिवारिक सीरियल और 2 प्रतिशत की किसी प्रोग्राम में कोई विशेष अभिरुचि नहीं है। सबसे ज्यादा संख्या में बच्चे मनोरंजन चैनल के रूप में कार्टून नेटवर्क देखना पसंद करते हैं। अतः अब यह आवश्यक हो गया है कि कार्टून के चैनलों के द्वारा भारतीय सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों को टेलीकास्ट किए जाए। महाकाव्य रामायण, महाभारत, भगवद्गीता तथा पंचतंत्र की कहानियाँ कार्टून चैनलों पर दिखाए जाएँ। मनोरंजन चैनलों के द्वारा टीपू सुल्तान, शिवाजी और भगतसिंह आदि जैसी महान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कथाएँ बच्चों तक पहुँचें। भारतीय समाज के छोटे-छोटे सदस्यों के समाजीकरण के लिए दूरदर्शन, उत्तरोत्तर, एक संस्था के समान महत्वपूर्ण होता जा रहा है। उनके मानसिक विकास और उन्हें भारतीय जीवन-मूल्यों तथा भारतीय जीवनशैली सिखलाने में दूरदर्शन की भूमिका एक चौंकाने वाली गति से बढ़ रही है।

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठगत प्रश्न 35.4

उत्तर 'ठीक' होने पर 'सत्य' और 'गलत के लिए' 'असत्य' हर प्रश्न के सामने लिखिए।

1. दूरदर्शन के प्रोग्राम सूचनाप्रद और शिक्षाप्रद होते हैं।
2. दूरदर्शन का मुख्य उद्देश्य साधारण मनोरंजन होता है।
3. दूरदर्शन के 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' दोनों प्रभाव होते हैं।
4. दूरदर्शन के द्वारा, विश्व में और आस-पास क्या हो रहा है, हम जान सकते हैं।

आपने क्या सीखा

- आधुनिक मानव ने अपने संदेश भेजने के लिए बहुमुखी (संचार तंत्र) बनाई है।
- संचार-माध्यमों के उपयोग के द्वारा विविध प्रकार के श्रोताओं के पास सूचनाएँ, विचार तथा दृष्टिकोण आदि भेजने या पहुँचाने का जन-संचार माध्यम एक साधन है।
- संचार माध्यमों में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें (जिनमें से सभी को प्रकाशित माध्यम या 'प्रिंट मीडिया' कहते हैं), रेडियो एवं दूरदर्शन (विद्युत चुंबकीय माध्यम 'इलैक्ट्रोनिक मीडिया') तथा चल चित्र आते हैं।
- जन-संचार माध्यमों के द्वारा निभाई गई सबसे महत्वपूर्ण भूमिका संस्कृति का विस्तार या प्रसार है।
- धार्मिक समूहों तथा अन्य सैकड़ों समूहों के मानव-व्यवहार संबंधी कार्य और विश्वास प्रेस पुस्तकों और दूरदर्शन तथा रेडियो के प्रोग्रामों द्वारा, सतत, वर्णित और चर्चित होते रहते हैं।
- प्रेषक से श्रोताओं तक सूचनाएँ, विचार, दृष्टिकोण आदि के भेजे जाने का प्रौद्योगिक (तकनीकी) साधन जन-संचार माध्यम कहलाता हैं।
- सूचना और दूसरी विषय सामग्रियों को प्रस्तुत करने के तरीके व्यापक रूप से अलग-अलग होते हैं।
- विभिन्न संस्कृतियों को एक साथ लाने में जनसंचार माध्यम एक साधन होते हैं।
- सांस्कृतिक एकता के विकास में राष्ट्रीय और स्थानीय संचार-माध्यम महत्वपूर्ण भूमिकाएँ अदा करते हैं।
- दूरदर्शन के 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक'-दोनों ही प्रभाव होते हैं। पर 'सकारात्मक' प्रभाव सदा 'नकारात्मक' प्रभाव से ज्यादा प्रभावी होते हैं।
- वास्तविकता यह है कि दूरदर्शन का प्रभाव बुरा हो या अच्छा वह इस बात पर निर्भर है कि हम क्या देखते हैं और क्यों देखते हैं?

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240

पाठान्त प्रश्न

1. जन-संचार-माध्यम का वर्णन कीजिए और उनके विभिन्न प्रकार लिखिए।
2. संस्कृति के विस्तार (प्रसार) में जन-संचार-माध्यमों की भूमिका पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

3. दूरदर्शन के 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' प्रभावों की विवेचना कीजिए।

4. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए:-

(अ) प्रकाशित माध्यम (प्रिंट मीडिया)

(ब) विधुत-चुम्बकीय माध्यम (इलैक्ट्रोनिक मीडिया)

शब्द कोष

अनुबंधित = जुड़ा हुआ या संबंधित

पूर्ववर्ती = पहला या पीछे का

अभियान = जन-प्रचार या प्रचार-कार्यक्रम

शिल्प (मूर्तिकला) = पत्थर तराशने की कला।

पैम्फलेट = बिना बंधे हुए छपी कागज के पन्ने।

सहमत करना = समझाना, विश्वास करना

प्रसार-विस्तार = प्रसार करने या फैलाने का कार्य।

अपरिष्कृत = प्राकृतिक अवस्था में, बिना सुधारा हुआ।

DIKSHANT IAS

चहल-पहल = आमोद-प्रमोद-

व्यवसायीकरण = व्यवसाय संबंधी क्रिया।

Call us @7428092240

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

35.1

(अ) उसी लक्ष्य से विकसित किए गए संचार माध्यमों के उपयोग के द्वारा विविध प्रकार के श्रोताओं के पास सूचनाएँ, विचार तथा दृष्टिकोण आदि भेजने या पहुँचाने के लिए संचार-माध्यम एक साधन हैं।

(ब) यदि संचार या संदेश एक व्यक्ति का 'आंतरिक' मसला है तो वह 'अंतराव्यक्तिगत संदेश' कहलाता है।

(स) यदि संदेश की प्रक्रिया दो या ज्यादा व्यक्तियों से संबंधित होकर आमने-सामने घटित होती है तो वह 'अंतर-वैयक्तिक संचार' होती है।

(द) यह सूचना, विचार, दृष्टिकोण आदि के जन संचार-प्रेषक द्वारा श्रोताओं तक भेजे जाने का वह तकनीकी साधन है जिसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें

(प्रिंट मीडिया), रेडियो और दूरदर्शन (इलैक्ट्रोनिक मीडिया) तथा चल-चित्र शामिल होते हैं।

35.2

(अ) रेडियो श्रव्य

(ब) समाचार-पत्र- प्रिंट मीडिया (छपा हुआ)

(स) फिल्म - दृश्य श्रव्य

35.3

(अ) उद्भव के स्थान से संपूर्ण क्षेत्र और आस-पास के क्षेत्रों अथवा पड़ोसी समुदायों में सांस्कृतिक भावना का फैल जाना 'प्रसार' या 'विस्तार' कहलाता है।

(ब) भोजन, पहनावा या वेशभूषा

(स) पेप्सी, कोका कोला।

(द) संतोषी माँ।

35.4

(अ) 'सत्य'

(ब) 'असत्य'

DIKSHANT IAS
Call us @7428092240